❀ श्रीश्रीगौरांगमहाप्रभुर्जयति ❀

श्रीगौरनामरसचम्पू

तथा

लघुगोपालचम्पूभाषा

卐

रचयिता—कृष्णकवि

सम्वत् २०१७
मार्गशीर्ष कृष्णा चतुर्दशी
न्यौछावर ।।=)

प्रकाशक—
कृष्णदासबाबाजी
(कुसुमसरोवर वाले)
मथुरा ।

प्रस्तुत श्रीगौरनामरसचम्पू ग्रंथ के रचयिता संस्कृत के धुरन्धर विद्वान, श्री राधादामोदरजी के अनन्य रसिक महात्मा, श्रीपादजीवगोस्वामीजी के प्रधान शिष्य श्री कृष्णकवि हैं। आप संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान होते हुए भी ब्रजभाषा के महान् पण्डित थे। आपने श्रीजीव गोस्वामीजी की गोपालचम्पू के आधार पर संक्षेप रूप से द्वादश अध्यायात्मक लघुगोपालचम्पू की रचना की। श्री राधादामोदरजी के मन्दिर में हस्तलिखित प्राचीन ग्रंथों की लाईब्रेरी में एवं वड़ौदा विश्वविद्यालय की हस्तलिखित लाईब्रेरी में इसकी कापी मौजूद है। आपने ब्रजभाषा में भी गौरनामरसचम्पू के अतिरिक्त लघुगोपालचम्पू-भाषा एवं लघुगोपालचम्पू की एक विस्तृतभाषा की रचना की। वावा श्रीकृष्णदासजी की चेष्टा से 'गौरनामरसचम्पू' एवं 'लघुगोपालचम्पू की भाषा' ये दो ग्रन्थ मुद्रित होकर रसिक भक्तों की सेवा में उपस्थित हैं। श्रीगौरनामरसचम्पू के लिखने का समय सम्वत् १७४२ तथा लघुगोपालचम्पू का समय १७४७ से कुछ पहले अनुमान किया जाता है। क्योंकि उक्त दोनों ग्रन्थ की परिशेष समाप्ति में प्रतिलिपि का समय गौरनामरसचम्पू में सम्वत् १७४२ एवं लघुगोपालचम्पू में सम्वत् १७४७ दिया गया है। जवकि इस समय से पहले ही उन ग्रंथों की प्रसिद्धि हो गई थी। गौरनामरसचम्पू में व्रज के तीर्थों का महत्वपूर्ण भावमय स्वरूप परिचय एवं प्रेमभक्तिजिज्ञासुओं का अपने श्रेय का परिपूर्ण ज्ञान, अनन्यता, उपास्य तथा उपासनातत्वादि का ओज पूर्ण वर्णन हैं। लघुगोपालचम्पू की भाषा में नित्यधाम गोलोक में श्रीकृष्ण की की हुई अष्टयाम लीला का गोपालचम्पू के आधार पर वर्णित है। वावा-कृष्णदासजी ग्रन्थकार के अन्यग्रन्थों का अनुसन्धान में हैं। आप अव तक लगभग संस्कृत एवं व्रजभाषा के ८० प्राचीन ग्रन्थ का प्रकाशन कर चुके हैं आगे इसी कार्य्य में व्रती हैं। केवल श्री गौरचन्द्र की सेवा भावना से आप इस महत्वपूर्ण कार्य्य में अग्रसर हैं। आपका समय इसी कार्य्य में व्यतीत होता है। आप सर्वदा विरक्त रूप में रहते हैं, न आपने कोई धन का संचय किया है। उनके कठोर परिश्रम का हम सराहन करते हैं, एवं प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि प्रभु उनको दीर्घ जीवित करें ॥इति॥ श्री गोवर्धनभट्ट (छोट्टनभट्ट) वृंदावन

* श्रीगौरनामरसचम्पू *

प्रथम अङ्क

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मिलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

गोपि अनुराग सुहाग रंग सों पगे श्याम
लग्यो अरुणाई श्यामता सों गौर गात है,
तपत कनक वर्न करें निज संकीर्त्तन
अंग झकोरत महा प्रेम झर न्हात है।
कंजमुख कंजगात भाव सुधा झर्यो जात
भकत भ्रमर पान करत ह्वै शांत है,
व्रज सरोवर अरु नदिया सागर माझ
कोटि चन्द्रमा सों भ्राजै राजै राधाकांत है ॥
सिरि सनातन रूप रसिकों के महाभूप
राग मार्ग के हैं यूप व्रज मधि राजे हैं
प्रेम रस नीति अरु लुपत व्रज की गीति
उद्धार करत गोविन्दादि सेवा साजे हैं,
श्री जीव जीवन मेरो उन्हों ही के मैं हूँ चेरो
जाके राधा दामोदर वृन्दावन गाजे हैं
कृष्णदास व्रजवास रचत नाम विलास
गौर नाम रस चम्पू जामें रस भ्राजे हैं ॥
या कलिकाल कराल है लगी विमुखता भूत।
यदि जीवे को चाँह है पिव पिव नामामृत ॥
गौर नाम रस चम्पू यह रसिकन के रस खेत।
ज्यों ज्यों गावैं त्यों त्यों हि महा प्रेम फल देत ॥

रसनिधि गुननिधि ब्रजनिधि भावनिधि
गोपी हृदय के निधि रस वस कहिये
रमाकांत च्माकांत गोपीकांत राधाकांत
बिष्णुप्रियाकांत नदीया के कांत गहिये।
रमा उमा शची सावित्री के सरवस धन
ब्रजधन नदीया के धन नित लहिये
जै जै गौरहरि ब्रजविहारी हृदय हारी
नदीया विहारी कृष्ण कवि मन रहिये॥
कराल कलि में कृष्ण प्रभु श्रीगौरांग भये
कृष्ण नाम गावैं सदा कृष्ण रस पीवे हैं
नाचैं गावैं मत्त ह्वै कैं संकीर्त्तन मधि सदा
प्रेम सुधा बरसे भक्त प्रान जीवे हैं।
कभी कृष्ण कृष्ण अरु कभी राधा राधा बोले
कभी च्चीन पीन कभी महाराग जी में है
कोटि कोटि अजामिल तारिवे को ब्रत जाकौ
फारिवे को जगतम कृष्णकवि धीमें हैं।
रसिक के रस खेत प्रेमि को जो प्रेम देत
सुधा को हि महासौत वसुधा रसात है
कामी शुद्ध काम लेत लोभी जन को लुभात
कर्मी ज्ञानी ध्यानिन को भाव में डुवात है।
अज रमा शिव उमा अरु देव देवांगना
जाकी रजः कणिका को सदा ललचात है
राधा हरि तकि तकि महिमा गावत जाकी
ब्रज सरोवर मधि सब सरसात है।
श्रीगोविन्द ब्रजचन्द्र वृन्दावन में विराजै
गोपीनाथ प्राननाथ राधानाथ कहिये,

मदन मोहन श्री गोकुलानंद जू अरु
श्री राधारमण राधादामोदर लहिये।
केशीघाट वंशीवट अरु जमुना के तट
द्वादश आदित्य, कालीदह मधि रहिये
जै जै सनातन रूप, रघुनाथ भट्ट, रघु
नाथ, जीव, श्रीगोपालभट्ट सदा गहिये॥

इति श्रीगौरनाम रसचम्पू मंगलाचरण नाम प्रथम अङ्क॥

दूसरा अङ्क

श्री राधा चरन चाल देखि गज बन चल्यौ
अङ्ग सोभा देखि शम्पा घन में दुरायो है
जंघा सोभा हेरि रम्भा काँपत पवनन सों
वेसर की गजमोती अधर रंग पायो है॥
मोतिन की हार भार मुकुट की चटकवार
वारन हाथ जैबे सी सीचित वाह्यो हैं,
कंचन की वास वास अंगन की घ्राण आस
कृष्ण की नूपुर ध्वनि कृष्ण कर्ण मायो है॥ १
रसीली किशोरी भोरी काम की कमान जोरी
भ्रू लता विलास हास श्याम रंग पागी है,
मृगशाव नैनवान चलत है जहाँ तहाँ
अंगन की ज्योत-भूम द्रुमलता लागी है।
कंचन की कांति अहो वचन में माये कहाँ
नील पट जोत ज्यों विजुरी की सी भागी है,
वदन की जोत देखि मदन निपत होय
कमल सुगन्धि भृङ्ग वृन्द भीख माँगी है॥ २॥
रतन की शीशफूल किरीट नवल हार
कुण्डल की ज्योत देखि चित्त वित्त रागी है॥

चरण की धरण देखि धरणी मोहित होत
भाज्यो गज वन माहिं पाटुल सो जागी है ॥
कंचन की बेलि जैसी श्याम सो तमाल लाल
लपटी लकुट हाथ फूल तामें लागी है ॥
जै जै श्री गौरकृष्ण को विलास धाम
नाम रूप गौर शौर कृष्णदास आगी है ॥ ३ ॥
यथा ॥ फूलि फूलि डोलत हरिजू किशोरी ।
ललित ललिता ललनाकुल मण्डित वीचें री राजत मोहन जोरी ॥
निरखत केशर केतकी कानन ढाकन फूलन शोभा
माधवी मालती विकसित शौरभ
अलिकुल गुञ्जत मुनि मन लोभा ॥
पूत मुकुल अलिकुल गुञ्जत पूजत शिखिकुल नृत्य करोरी ॥
अङ्गन शौरभ शोक कला कुल कृष्ण सो छूटत होत बटोरी ॥४॥
कपट कपाट आढ़ चितमधि लग्यौ गाढ़
ममता सो आड़ परी कैसी विधि करी ये ॥
छाती पै नाचत है जू वामना नवीना नारि
बँधि गई तार तापे कहो कैसे तरिये ॥
अंगन की गाँठ गाठ घोंटू की मटक अहो
खट् खट् आवाज तापै तरीये वा मरिये ॥
पाशान एहसान होत वैसी बोझ वैसी चोट
कोटि कोटि होत हाय तामेंहू तो चरिये ॥ ४ ॥
बजर को आहट जैसो वैसो कोउ करत ही धरयो
पहचान ताको कैसो विधि करीये
काम क्रोध लोभ मोह मद मातसर्य्य जे हैं
सबै मिलि क्रीड़ा करें कैसैं धैर्य्य धरिये
निरन्तर केश धरि माया पिशाचिनी खड़ी ।
यम गण नृत्यत हैं कहो कैसैं तरिये ॥

अपार करुणाधारी साधुन को हितकारी
शिरी गौरनाम शक्र चक्र कृष्ण झरिये ॥ ५ ॥

दोहा—हरिनाम बिना हरिकाम कहाँ काम बिना कहाँ बीज ।
बीज बिना हरि तनु कहाँ तनु बिना कहाँ बीज ॥
हरि राग बिना हरि भाग कहाँ भाग बिना कहाँ भोग ।
भोग बिना सुखभोग कहाँ सुखभोग बिना कहाँ जोग ॥
हरि रंग बिना सत्सङ्ग कहाँ सत्सङ्ग बिना कहाँ अंत ।
अंत बिना एकान्त कहाँ एकान्त बिना कहाँ कंत ॥
कंत बिना कंतार कहाँ गौर बिना कहाँ श्याम ।
श्याम बिना अभिराम कहाँ अभिराम बिना कहाँ नाम ॥६

सुनरे सुमन भाई सुमेधा सुधीर गाई
भगवती वृहन्नाम जाको डर लागी है ।
कर्म्म धर्म्म शोक दुःख मोह मान भय राशि
काम क्रोध दम्भ मद कहूँ दूर भागी है ॥
भगीरथ भागीरथी लायो जैसो बहायो राख
वैसीहि प्रभु की नाम गंगहि सी जगी है ।
मरघट मनुषातनु हरि की आराम भयो
गयो दोष कुचिल सो जोति जगमगी है ॥ ७ ॥

भूतनाथ काशीश्वर कैलास की रहनहारी
गौरी गौरनाम रस चित्तमधि पगी है ।
चतुर आनन जाकौ ताकों सो मोहित कियो
चाँद की चाँदिनी जैसी वैसी चितरंगी है ॥
रमा उमा शची क्षमा कांति अरु तिलोत्तमा
पति रंग संग छांड़ि निरन्तर तकी है ।
मान अभिमान पति धर्म छांड़ि निज मन
जै जै बिहारी बलि बनत सेवकी है ॥ ८ ॥

दोहा—धिगधिक् मनुजा जनम करम और धिक् धिक् वेद विचार
हाहा हरिनाम सुंहरि नहिं पायो कहा कृष्ण आचार ॥
सुघर ओस्ताद महल बनाया कर्त्तादि याहे रीझ।
तैसी रीझ निदुंन्द हरि करौ दुन्द है भव बीज ॥
गौरीपति के चित्त सरोज में जैसे है गिरधारी।
तैसी तुमरौ नाम प्रताप सुं मोहि करौ अधिकारी ॥
नाम प्रताप सुं ध्रुव ध्रुव गणिका अजामिल सुखभूप।
दासीसुत सों नारद भयो गज भयो रस रूप ॥
नाम लै लै शिव शिव भयो गौरी भई जगमाता।
सन शुक व्यास गंगातीर्थ हरिजन भये जगत्राता ॥
चपल पटल सो अटल भयो दुरित भयो सुरीता।
गौरनाम की चहल वहल में पापीकुल जगजीता ॥
तापी सो वापी भयो कामी भयो है प्रेमी।
असन्तोष सन्तोष पद पाया गौरनाम की नैमी ॥
गोपी पति गौराङ्ग शचीसुत राधिका नागर गौर।
जो या विधि रटत है सो मेरे शिर मौर ॥
पतित पावन जल निधि करुणासिन्धु अवतारा।
जो या विधि रटत निति सो मैंरे गलहारा ॥
सुनो सुजन तुम कहा करों तन त्यज सुख की आशा।
याहि तनु में वा सुख पावें जो होय गौर पद दासा ॥१०॥
हूँ त वड़ी सूंमहूँ भैयाजू मरखुं गौरनाम की।
देखों अब कैसी होय है भव भय करुणाया काम की।
दें पछार या सुख भोग अब डारूँ हूँ भूम में।
लाल किशोरी उर में धारूँ काम लै डारूँ सूम में ॥
हरि विमुख तन स्वभाव कौं अब करूँ हूँ खाख।
तव जानू श्रीकृष्णचैतन्य नाम अद्भुत शाख ॥

कहा कहूँ हूँ भैया मोकों निगल गयो कोउ भूत ।
वा भूत कौ कदन करन हारौ या गौरनाम यमदूत ॥
विविध वासना कोटि पोट सो मेरे उर पै राजै ।
बाई ठौर गौरहरिनाम कोटि चंदसी गाजै ॥
बहु जनम वह वह गयो या जनम है हाथ ।
देखिये अब का करै है श्री गदाधर नाथ ॥
लिंग मेरी शृङ्ग बनाया रसना कियो हसना ।
उदर ने नादर कराया त्वचा भयो बस वसना ॥
और कहा कहूँ भैया मैरे इस मन ने जो कीया ।
कुचिल नारि दुर्गन्ध कूप में मोय डार इन दीया ॥
कहाँ मैरे चिन्मय रूप कहाँ नरक नट धाम ।
कहाँ मैरी ललित किशोरी प्रेमरस जहाँ है काम ॥
अद्भुत मनुषा भाव वे कहां कपोल कपोल दोउ जोरें ।
अङ्ग अङ्ग भुजबंध करि करकंज नैन मोरें ॥
नील नैन सो लाल भयो लाल नैन अति लाल ।
कहा सुख में नैन पग्यो हैं सो जाने द्विजबाल ॥
हिर्षी मनुषा निर्षी जानो तिर्षी तन धन धाम की ।
फूलि फुल्ल डोलै निरखे परतन या मनुवा कहा काम की ॥
रुचि रुचि सुख दुख भोग करत है पाप पुण्य की कांच ।
विमुख जीवन को जौलों लग्यो नहिं श्री गौरनाम की आंच ॥
नामरस चम्पु कंप कलाप है सुभग सुमेधा गाई ।
कृष्ण उर सारदा सुरनर जननी सदा बसो मन भाई ॥ ३२ ॥
॥ इति श्री गौरनाम रस चम्पू द्वितीयांकः ॥

तृतीय अङ्क

दोहा–बिना कारण दुरित करै है मेरौ मनवा वाम ।
कारण रहे तो सब कछु सहूँ सुनो नटवर श्याम ॥

मनसा पाप में तनु जले है तनु का पाप तनु धारी।
वचन पाप में बदन मलीना या विधि पाप वनचारी ॥ २ ॥
कवित्त—नमो नमो ताको अहो पार नहिं जाको
अपार करुणा सिंधु प्रेम रस राशि है।
हाटक शटक जात अङ्ग अङ्ग छवि देख
नंद की किशोर लाल नदिया भूवासी है ॥
अपार उदार धीर धीरन को चित्त चोर।
वीरन को ओज थीर थीरन को पासी है ॥
देवन को देव देव देवीन की नैन जेब।
पापीन को त्राणरूप विमुखन की हाँसी है ॥
भृत्य को भरतार रूप कामी को काजर कूप
पुहयन गंध जैसी भक्त दुःख नासी है।
भारकों हरण हारों रस शुक नैन तारो
तापीन कौ चंद कोटि दीनन कौ प्यासी है ॥ १
दोहा—शुभ अशुभ कर्म्म जेते सब ही हरि से वाम।
कहाँ उज्यारी कहाँ अँध्यारी तौभी रजनी नाम ॥
कर्म्म कछुवा जाहे पकरै छोरत सो नहिं जाने।
निबल तनु सो मरि मरि जाय सबल वेदना माने ॥
हरिजस लीला नाम बिना वचन कर्म्म सब जानो।
श्री वृन्दाविपिन को वास बिना तनु श्रम कर्म्म कर मानो ॥
हरिपग कैसी विचार बिना और सब मनसा कर्म्म।
सुमन सुमेधा या विधि गाई कृष्ण कीर्ति रस रङ्ग ॥
कर्म्मचक्र सुश्रुमार चक्र दोउ एक हैं भाई।
जो चढ्यो सो सदा फिरेगो या विधि सुमेधर गाई ॥
कर्म्म करि करि खर नर देवा याहि तन में होहै।
कर्म्म छोर चितमोर जो सो हरि पद पंकज सूं सोहै ॥

कर्म्म कुतिया शोर करे है कान बधिर होय जाय।
मार मार या कर्म्म कुतिया या विधि सुमेधा गाई॥
कर्म्म करके या अज अंड पै अमर नहिं भयो कोऊ।
अज सुर मरे कोई नहिं जीवैं कहे सुमेधा सोउ॥
मनवयार को जर क्रिया है जरकों डार्यो तोर।
जै जै जै जै गौरनाम की को विधि समझै मोर॥
पाप की झरी तमोगुण करैं काम की झरी रजने।
धरम की झरी सतोगुण करैं सबकी भोक्ता मनने॥
मन जाय माया पै धर्यौ माया धर्यो है काया।
काया लगी इन्द्रिय की इन्द्रि विषय कूँ धाया॥ ११॥

पद—मन रे काहू कौ नहिं विषवास।
नहिं मात नहिं तात नहिं मेरे याहि गात
जो देखों सो सब माया पास॥
कोउ काहू नहिं मीत कहा देखों भाई
मीत नहिं बैरि याहि जग माहिं॥
कृष्ण के किलोल जानो कृष्ण सबै जग मानो
कृष्णदास लीया है यासाहि॥

दोहा—पदमनाभ पद आशा ललित है तामें बलित जो चीता।
छिन छिन नना रङ्ग धरे है सो जीव या जग जीता॥
विषय वासना विपरित राहू चित्त चंद अंध्यारी।
हरि पग आशा शरद शशी सो जगत करे उजियारी॥
हरि पग आशा कामधेनु है जो माँगे सो पावै।
विषय सुख आशा विट लगौ है कर्त्ता को मुरझावै॥
हरि पग आशा अमर सरीता तीन लोक की त्राता।
देह सुख आशा मूतनदी ज्यों बाँधे या जग नाता॥
हरि पग आशा हरष करावे जैसी बाल जननी।
विषय सुख आशा ललित जग में जैसी राकसी ललनी॥

हरि पग आशा कपूर पूर केशर श्री षंड कस्तूरी ।
विषय सुख आशा विचार जोग में जैसी दुर्गन्ध मोरी ।।
हरि पग आशा मोक्ष पदवी तनु सुख आशा बन्ध ।
अमृत छोड़ कै विषय कूँ धावै ऐसो जगजीव अंध ।।
सुनो सुमेधा सुमन कहै है हरि पग आशा याकुँ ।
कहा विधि पावै उर मधि लावै काम ताप है जाकुँ ।।
या जीव कुँ भवभूत लग्यौ है जीव भयो अज्ञाना ।
जीव बस करि माया चढ़ाया अपनौं त्रिगुण सो बाना ॥
बोली सुमेधा सुनो सुमन तुम साँच कहो नहिं ज्याँच ।
जीव चोर सो धातु नहि पायो पायो है झूठी साँच ॥
मनुवा छूटे जड़ तनु फूटे मिटै इन्द्रिय अँधियारा ।
धनि धनि श्री गौर किशोर नाम या विधि इन्द्रि सुधारा ।।
काम कमान सो टूट गयो है जैसे रघुवीर हाथ ।
गौर किशोर नाम वीर वैसे तोरत या जीव गात ।।
चित्त चिड़िया उडि उडि जात है हृदय घेसुवा छोर ।
विषय अम्बर लम्बन करै कृष्ण विना कहाँ ठौर ।।
गौर बिना सौर नहिं दीसे सूरत रस रङ्ग वैर ।
मुरू झरहि कुसुम कुल वाटी कौन चलावै पैर ।।
गौर गौर चित चिन्तन सौं कृष्ण रस की खान ।
कपट भट पैं ज्यों चलै ज्यों सारङ्ग धनुष सूँ वान ।।
अँखिया मेरी दुखिया है सो रूप रूप में लाग ।
कृष्ण की कृपणता हरण परम वै गौरनाम महाभाग ॥
कालीमर्द्दन कमल विलोचन कंसारी अघनासा ।
गौर पग को ज्योत निरखि कै निरख पुकारें या दासा ।।
मन मतोवाल गजराज है भाजत है वन माझ ।
वाको मर्दन को करेगो बिना सिंह द्विजराज ।।

सुरजसुता तीर रोय रोय कैं कबहूँ गाऊँ श्यामा।
मनुषा जनम तबहि सुफल धनि धनि कीसन सो नामा॥
चित्त को चैतन्य है हरि चरण अनुराग।
इतर चित्तसो सतर कहाँ सुनो कृष्ण चित लाग॥
कहा करेगो हरिजन सङ्ग वेद पुराण इतिहासा।
चित्त वित्त हरि अनुराग बिना सकल नारि नर भाषा॥
तनु जड़ चैतन्य कौं त्यज्यो हो दीरघ दीरघ श्वासा।
भली होयगी चिन्तामणि चिन्तो गौर नाम रति आशा॥
तूतो तन में लपट रह्यो है तन में है सो काल।
तामें कलियुग घोर अँध्यारी सब साधन दियो चाल॥
एक साधन है हरि गुण नाम अनाथगण जन नाथा।
काल कराल कपट भट नाशा रसिकगण रस गाथा॥
व्यास सुक नारद रूप रस खान श्रीधर सनातन वाणी।
अहो धीर धीर सुमेधा जो कछु गाजे सो सुनो रससानी॥
गौर पद पंकज प्रीत शीत में जो जन जनम बिताया।
करुणा सिन्धु अधम जन वन्धु सो जन नाम चेताया॥
अहो वा सरस रूप वेश में जैसे चित बित लाग।
वैसे तुम्हरौ नाम गुणन में मोहे करो महाभाग॥
कृपण धन पाया फूलि गई काया कुटिल गति चलैं गैले।
वैसी तुम्हरौ नाम रस पी पी मैरे चित होय सैले॥
कुच मुख रूप नैन गति जंघा अधर अधो रद गंड।
तुम्हरे नाम रूप गुण रस लीला ताहे मोहे करो भंड॥
नागर गौर गोपाल मनोहर हरि गोविन्द गिरधारी।
मैरे रसना कब रटेगो ढर ढर लोचन बारी॥
गोपी पद पंकज पराग में धूसर भ्रमर मन मैरे।
कब करोगे नरहरि गौर हम दास दास हैं तेरे॥

वचन अगोचर गोपीपद आभा शिव अज नारद गावे।
विषयी विषय रस मद मनवाला सो पद कैसे पावे॥
निर्गुण गुण रासि रसिक शिरोमणि कमलाबल्लभ कान।
मेरो चित रटो लटो मति कबहुँ वृषभानुजा रस खान॥
रोहिणीनन्दन रेवतीरमण बलदाऊ अविनाशी।
तुम्हरी चरण सरण हूँ आयो मति करो मोसों हासी॥
तुम्हरो माया जगत नचाया काया काया अटिक्यों।
इन्द्रि इन्द्रि रमण कराया तुम्हरो कदम युग सटिक्यों॥
कालिन्दी कर्षन कमल-विलोचन हलधर मतवाला।
मेरो मनुसा जनम मन तनुत्राणो का रखवाला॥
प्रेम पियाला कर पर राजैं हल मूसल हैं हाथ।
रूप फटिक मणि चटक नीलपट रेवत तनुजा साथ॥
वन माला मणिमयमाला गुञ्जमाल हिये राजै।
नवल गोपवधु कोटि कोटि मधि नित्य आनंदघन गाजैं॥
वदन सरोज मदन मतवाला काम गयो तनु छोर।
मंद हास विलास भाप व्रजवधु चित वित चोर॥
लाल अधर नयन जुग लाल लालचरण युग शोभा।
लाल चित वित कर युग लाल अमर मुनि मन लोभा॥
विमान ताल ध्वज गगन गरजैं आयो है जगमाझ।
नगर नदिया भयो बहु दिया दिनमणि गयो सो भाज॥
काम अँध्यारी विमुख तन डारी हरिजन कियो उजारी।
गौर गौर नरनारि वदन में या विधि जगत सुधारी॥
अब भये तुम नयन। अगोचर कहा करूँ हूँ अंध।
अपनो स्वभाव मे वलित होय के देहि गौर पद द्वन्द॥
पूत वियोगिनी जननी जैसो छतिआ पै धरि हाथ।
हा हा पूत पूत पुकारें तैसि करो जनाथ॥

पति वियोगिनी जैसि हा हा नाथ नाथ पुकारें।
कुररी वत तुम बिन तैसी रोऊ हूँ बारं बारें॥
हा राधे वृषभानु कुँवरि कलिंद गिरि तनया तीरे।
कबहूँ रटहूँ फट फट छतिआ भटकू धीर समीरे॥
राधा पद ज्योत अरुण छवि छायो है वनमाझ।
पद नख जोत जोत पटल अटल श्री नैनाराज॥
अङ्ग सुगन्ध मन मोहन मादक सगरे सौरभ सार।
घ्राण पान कब करेगो भ्रमर भृङ्गउ निहार॥
नीलपट कच ज्योत निरखि कैं बिजुरी भई चकिआ।
वदन निरखि कै कोटि मदन मन मदनमोहन अंखिछकिआ॥
नैन पलक कोटि सुख सुधा ज्यों नील कमल दल पाली।
वर्षत है तिरछीगण अखि दोऊ ओर स आली॥
हाटक मुकुर गंड जुग शोभा अधरदशन छवि न्यारी।
बाल शरणागत तोष पोष सुभग सघन कुचयुंग प्यारी॥
नाना हार हमेल शीशफूल स्यमंतकमणि श्री शीथे।
श्याम कंचुकी श्याम मन मोहिनी श्रीगिरिधर नागर वीथे॥
रसवेल पूग द्रुम जैसि गोल तन अभिरामा।
निरखि डोलें निज पद किंकर मोहन मोहिनी श्यामा॥
कोटि जननी सनेह रस पाली राजिव लोचन प्यारी।
अभय पदारथ कबहुँ निरखुँ जुथ जुथ बृजनारी॥
कंचनबेलि थिर तड़ित ज्यों अरुण अधर मृगनैना।
कबहुँ निरखुँ व्रजबंधुवृंद गोविंद सुख शुभ चैना॥
इति उति डोलैं श्यामरस वाटी हरि पग पंकज कामा।
कबहुँ निरखु करुणा रस सरसी ललित ललिता नामा॥
अनुराधा राधा वय भूषण राधा रूप गति भाषा।
नाम विशाखा कबहुँ निरखूँ राधा द्रुम गुरुशाखा॥

चित्त चिन्तामणि मदन रसवाटी चित्रवसन अभिरामा ।
कबहुँ निरखुँ परम रस ध्वजा चतुर चित्रा शुभधामा ॥
चम्पक वरणी चाँद चमक ज्यों बिजुरी वेलसि राजैं ।
कबहुँ पेखु चम्पकलता सखि हरिरस मद सूँ गाजैं ॥
कथा किरंतन ठौर ठौर सुनकै चित्त सान सो काई ।
हरि पद कमल इति उति पिछलैं ठौरे नहिं मन भाई ॥
भाव सूरज की किरण पाय सो काई भई मुरझानी ।
चित्त सान पैं चरण चलावे शुभमुखि राधिका रानी ॥
भाव भाव सो सब कोउ कहैं या जीव में कहाँ भाव ।
सगरे भाव मिलि नाम भये हैं गौर गौर रस पाव ॥
या कलि रजनी घोरतम है सूरज गौर हरि नाम ।
नाम बिना कबहुँ नहिं छूटें नर मन मादक काम ॥
काम छुटे तब प्रेमरस पावे या जीव दुख कुल भोगी ।
प्रेम ज्योत जब देख्यो जीव तब जीव होय हैं योगी ॥
जब योगी भयो है जीव तब जीव सो वियोगी ।
जब वियोग धस्यो है हिय पैं तब जीव सुख भोगी ॥
तब जानेगो सुक मुखवानी गीता रसिक रस वाणी ।
बिना सुमेधा कौन करेगो या जीव शीतल प्राणी ॥
रूप लहरी सूँ चित वित लग्यो सुमन चलों तुम तहाँ ।
राधिका रमण रमण करेंहे वृजवधु निकर हरि जहाँ ॥
रङ्ग रंगीली राधिका आली परम ज्योत रसधामा ।
अब तुम निरखो नीलपट ज्योत देवी जोत रंग नामा ॥
सकल रस पाली राधा पग आली शुद्ध कनक द्रववर्णी ।
अहो परमउदारा सुधाशुभधारा सुदेवी भवतर्णी ॥ ६६ ॥
अतितुङ्ग घन उरोज नाशा शुभभाल मृगिसुत नैना ।
सकल विद्या विशारद तुङ्गा गंगाधर चित चैना ॥

इस इंदु इंदु बदनी इंदीवर श्रुति साजैं।
इन्दुलेखा राधापग आली राधापग में गाजें॥
अति ज्योत कीर्ट मुकुट छवि कुटिल कुंतल कुलबलना।
अहो शौरी वृन्दा वृहद्बनदेवी श्रीगोविंद रतिसुख ललना॥७२॥
मधुर मधुपति मदन विलासी मदनमोहन रस राशी।
अङ्ग सुगंध कानन भरिदीनी अधर मंद मधु हाँसी॥ ७३ ॥
रूप रस भाव कुँमुदिं प्रकाशी मदन मदन मदधामा।
अघ घटना हरिलीला शीला श्री रूप मंजरी नामा॥ ७४ ॥
तड़ित लता ज्यों इते उते डोलैं कोटि कोटि व्रजरामा।
वृंदाविपिन अति उजियारी बीचैं हैं हरि श्यामा॥ ७५ ॥
कोउ निरखैं है राधामुखचंद हरिमुखचंद कोऊ।
गद गद कंठ पुलक वलित तन अरुण अँखियां शुभ दोऊ॥
प्यारी प्रीतम चरण ठमक सुँ कोटि मदन तन छोरें।
निरखि निरखि जुगभुज चालन तड़ित कोटि चित मोरें।
नैन अनुराग अरुण कमल ज्यों प्रेमरस सरसी झरणा।
वादर भ्रमर कोकिल रव वीणा जुग कंठ कूप पै शरणा॥
नामहि उच्चारें नाम रस चम्पू नाम है श्री हरिराधा।
कृपण कृपणता कृपा करकैं हरैं कृष्ण चित वाधा॥ ७६ ॥

इति श्रीगौरनाम रस चम्पू तृतीयांकः॥

चतुर्थ अङ्क

कामी काम सो दाम लगाऐं अपनो स्वारथ काम में।
हरिजन तन मन चित्त लगावें हरिपग हरिरस नाम में॥ १ ॥
कायर सो भाजत डोलें सूर नहिं छोड़ें रन।
हरिजन हरिपग कबहुँ नहिं छोड़ें छोड़ दें निज तन॥ २ ॥
व्यसनी नारि की दशन हसन छवि व्यसन नर चित छाया।
तैसी हरिजन सूँ हरिलीला छायगई शितकाया॥ ३ ॥

लोहे पैं तो धार नहीं है सो लोहार धार बनाया।
हरिलीला रचित करकैं हरि विमुख पैं धाया ॥ ४ ॥
जगत भर के सब हैं गुरु चेला नहिं कहूँ दीशे ।
चेला होय तब भव भय तरिये हरि पग पंकज शीशे ॥ ५ ॥
चेला भयौ है गुरु याको और गुरु भयो है चेला ।
देखो कलि की उलट पलट गति ब त बात अवहेला ॥ ६ ॥
कान फुकावें बैर बसावें अपनी सुख को चाहा ।
गुरु घर आये गुरुन की आगे सब बातन की हाँ हाँ ॥
गुरु सेवा गुरु पग वंदन गुरु सुख आज्ञाकारी ।
तन मन वचन से सदा सेवे जो ताय मिले गिरिधारी ॥
गुरु पग में हरि भाव नहिं मनुषा भाव विचारें ।
सो नर खर स्वान सूकर ह्वै झूठी वा आचारें ॥ ६ ॥
या कलि में नर कान फूँकाङे बहुधा जग जन देखा ।
कहो मन कैसें वाय बसैगो हरि पग कंज नख रेखा ॥ १० ॥
हरिलीये हरिजन गुरु जो जीव करें सो चेला ।
या जगत में बहुधा प्यारे गुरु चेला की मेला ॥
सद्गुरु श्री हरि पग रज रसिया भाग्य करिके पाया ।
भाव प्रेम रस तबहि मिलेगो भ्रम छूटे मन काया ॥ १२
विषय रसिया गुरु विषय में डारें हरि रसिया हरि पग में ।
गुरु मन बीज नाम फलेगो ठौर ठौर सो भ्रम में ॥ १३
भागवत रसिया गौर अनुरागी बिना गुरु सो झूठा ।
नाना मन जो बकत डोलें हैं सो जानो तुस कूटा ॥ १४
रागमारग विधि मारग दोउ श्री गौर हरि पद द्वन्द ।
इत उत कहाँ ढुडत डोलै मैंरे मन अति मंद ॥ १५
प्रेम पियाला गुरुकर राजै श्री गौरनाम मद ताय ।
अमली होय सो अमल पीयेगो बिन अमली कहाँ जाय ॥ १६

करम बन्धन सों गुरू छुटावे हरि पग ज्योत दिखाऊं।
या जगत सब कुहक की वाजी शीष्य कुं चटक चेताऊं ॥१७
नाम नाव सो गुरु हे माझी भवसागर तन तरिये।
गुरु कृपा चरण रज बिना याहि तन में मरीये ॥१८
गुरु तन धरि हरि आप आये हैं अपनो जन सुध दिया।
तन मन वचन सब दूर कराये राधिका चरण पैं लीया ॥१६
चंचल गुरु को कृष्ण करि जानो धीर गुरु सो राम।
क्रोधी गुरु को नरहरि जानो लोभी वामन नाम ॥२०
जड़ गुरु को दत्त करि मानो ज्ञानी ऋषभ अवधूत।
कर्मी गुरु को कमठ करि मानो गृही गुरु यादव पूत ॥२१
जोगी गुरु को कपिल करि मानो छलिया मोहिनी नारी।
चाल गुरु को सनक करि मानों बकवादी भूगोल फणधारी॥
शंकर गुरु को शंकर मानो नारि गुरु सो राधा।
या विधि गुरु चरण जो निरखें मिटे सब चित बाधा ॥२३
गुरु बिना कभू भव नहि तरिये सुनरे अवुध चित प्राणी।
वेद पुराण इतिहास सुधा सो गुरु बिना गरसीनी ॥२४
परम पुरुषोत्तम गुरूपद ध्याऊं राम कृष्ण अवतार।
गुरु बिना हरि भजन जेते सगरे मरघट छार ॥२५
गुरु सेवा हरि सेवा दोउ तौल चित्त लगाय।
भारी है गुरु की सेवा या में हरि पग जुग पाई ॥२६
रामचन्द्र नरोत्तम श्री श्यामानन्द श्रीनिवास।
गुरु सेवा करि सिद्ध भये गये राधा पग पास ॥२७
गुरु कृष्ण कृष्ण हे गुरु वृन्दा विपिन गुरु जानों।
गुरुचरण रज शीश पैं धरौ सुफल जनम निज मानों ॥२८
परम पदारथ शची सुतनाम उनकी नाम गुरु राजैं।
कपट खोलकें सुमन सुमेधा दास कृष्ण चित्त गाजैं ॥२६

इति श्री गौरनामचम्पू चतुर्थ अंक ॥४

पांचवां अङ्क

दोहा—भक्त बिना भगवंत कहां हरि मन्दिर है भक्त ।
सुनो सुमन तुम अब मैं कहूँ भक्त तत्व रस जुक्त ॥१
भक्ति योग गुण अतीत है तनु अभिमान हीना ।
जाहि चढ़ैगी सो जीव होगो या जगत में दीना ॥२
कातर वदन हरि वियोगी हरि जस हिय पैं राजै ।
हरि पदनख जोत देखिकैं मत्त सिंह सम गाजैं ॥३
गद गद कण्ठ रहसि निवासी गुण दोष सूँ हीना ।
अपनो चित्त कूँ आप शिखाऊँ सो जगत कूँ जीना ॥
छिन छिन हरि हरि छिन छिन राधा छिन छिन गौर पुकारें
छिन छिन इत उत झूक परे है हूँ हूँ हूँ हूँ हुंकारे ॥५
परम दयाल जीव गति देखिकें अखिया बहे है वारी ।
हा हा गौर गौर पुकारें जैसी विरहिनी नारी ॥६
काम क्रोध मद भय अभिमान जनम मरण युक्त जीवा ।
देख देखकें चितमधि चिन्तें कैसे होयगो शीवा ॥७
छिन छिन कहे है हे हे हरि हरष करो निज दासा ।
मनुषा जनम पुन कब मिलेगो बाँधो निज पग आशा ॥८
हरि पग चिन्ता चिन्तामणि चिन्तै अपनो चित्त रस रूप ।
हरि लीला गजराज पीठ पै जैसें नरवर भूप ॥६
दीन दयाल परम हितकारी अति उदार अति धीर ।
चपल इंद्री सब फोर तोर कैं हरिजन कियो है थीर ॥१०
कहा कहू मन हरिजन रूप वदन चन्द्र अभिराम ।
लाल लाल अँखिया दुःखकुल मोचन सोहै राधिका श्याम ॥११
भव रस पीकें भगवत रस पीवें है दिन राति ।
भीतर बाहर सब रस देखे रसिक भक्त रस जाती ॥१२

ललना रूप खाँडे की धार चल्यो रति पति हाथ।
हरिजन शीश जाय परेगो ढल्यौ नैन चित गात ।।१३
नारि यौवन विषय सुख चाहा और विषई संग।
हरि भजन सब वहे वहे डोले भाज जाय हरि रंग ।।१४
रसना लम्पट बसना लम्पट नारि लम्पट त्यजो ।
वित्त जस नाम और सब छोड़कें हरिजन हरि कुं भजो ।।
विषय लम्पट गुरु से वाम गुरु आगैं वैराग ।
वकत डोलैं जो अपनो जस ताहे तजो अनुराग ।।
हरि विमुख जन संग यैसो ज्यों तेल की बूँदा।
तन मन जल सो छाय जायगो हरि साधक होय भूंदा ।।१७
गुरु अनुरागी गौर वियोगी गोविंद पग चित आशा।
दीन हीन जो आपकूँ माने सो भक्त हरि दासा ।।
चीर कन्था वृजरज भूषण ढर ढर नैन अतिलाल।
अति कवि पण्डित परम चतुर हरिजन जैसी वाल ।।
मधुर वचन जीव हितकारी कुटिल रहित चितधारी।
अजात वैरी त्रिभुवन भरिकै हरिजन नरनानारी ।।
परम संतोष लोभ रहित चित ज्यों रजनीकर राजैं।
हरिलीला पै जटित हरिजन हरि हरि कहिकें गाजैं ।।
कहा कहूँ मन हरिजन चितरित छिन छिन हरिपद देखें।
आव आव कमलाकुल वल्लभ धरणी पै नख रेखे ।।
आजि कालि करि मोहे भुलावे छलिया नागर कान।
मोहि दीन कूँ कहा छलो हो छलो नाम रस खान ।।
क्यों आये हैं धरणी पै तुम क्यों छोड़ो हो नाम ।
नाम लीला सगरे लैकैं क्यों न गये निज धाम ।।
वडशी आधार धरकैं तिमिकुल जैसी मारैं ।
अहो वंशीधर तैसे तुम अब करौ अविचारैं ।।२६

बाजीगर की माया दिखाये तनु धन जन भगनारि ।
अपनो पग कूँ छिपाय रखो हो याहि बारम्वार ॥
ऊसर भूमि में बीज परयो है अंकुर कैसे होय ।
गुरूजी कान में नाम दिया सहि चेतन रह्यो सो सोय ॥
काम जाल की फेर फार गति तुम सब जानो श्याम ।
गौर नाम जल तिमि हम तामें मोय रखो अविराम ॥
ललना सुं वतिआ करें छतिआ आग लगावे ।
देखो या जीव गति हरि हरि गौराग दिखावे ॥३०
ललना रूप गरल पिआलों ज्यों कहै वैरागी ।
गांढ कौपिन वाय न देखें ताय होय अनुरागी ॥
भले चतुर तुम श्याम सलोने नारि धन भीत की आड़ें ।
कहा सुनो तुम हमरे रचना सुवि मुख ठाडे ठाडे ॥
लाज छोड़िकें आगे आवो वंशी वदन दिखावो ।
लरनो भरनों सब हम छाड़यो राधा नाम मुख गावो ॥
हे प्यारे नैंन युग तारे हूँ हे राधिका दासी ।
कुत्सित जनम मोहि कराय कैं क्यों करौ मोहि हासी ।
वाल पौगण्ड और कैशोर योवन बीचि तीसरी ।
तन की वय वहें वहें गयो चित्त नहिं भयो शिशिरी ॥
अब तुम कृपा कर मोहि नाथ कूँट कंटक घुचाओ ।
हम जाहुँ गिरिवर की छैंया जल्दी तुम तहाँ आवो ॥
कहा कहौं हो नर तनु दुर्लभ हरि पद या अँखिआँ ।
गौरनाम गैरी मोहि लग्यो है तातेंहूँ है दुखिआँ ॥
मार धार और जरे जरावें उठ उठ नार पकरें ।
काली दह पै कान्हा आयो जावा जावो मोहि भगरे ॥
कमल विलोचन कमल अधर शुभ वदन चंद्र अभिराम ।
पतित पावन अधम हितकारी राधिका रमण घनश्याम ॥

अजामिल गजराज पायो पायो जगाई दोऊ भाई ।
गणिका कुब्जा विदुर हनूमत पायो नटवर राई ॥४०
और भी बहुवा कलियुग जीव्रा लै गये निज साथ ।
धीर समीर में मुरली पूरे रसिक राधिका नाथ ॥
केशी तीरथ तीरथ करें है यमुनातीर उजियारी ।
जाय मिलों तुम वंसीवट पैं मोहन राधिका प्यारी ॥
श्याम वरण सो गौर भयो गौर भयो घनश्याम ।
जुगल बिहारी जुगल जुग रुप हरिजन चित मधि धाम ॥
वैसी भक्त अनुरक्त चरण पैं सदा बसो मन भाई ।
भाव अपार हरिजन लीला कृष्णदास रसगाई ॥ .

॥ इति श्री गौरनाम रस चम्पू पंचम अङ्क ॥ ५ ॥

षष्ठ अङ्क

जै जै जै जै वृंदाविपिन इन अंखियन रसमाला ।
सदा सनातन बिहरे जहाँ वृषभानु शुभबाला ॥ १ ॥
नील ललित यमुना जल धारा बह चले ज्यों चाप ।
ज्यौं दिखे ज्यौ ब्रजपति भूषण शिशिर रुप हैं आप ॥ २ ॥
केका नृत्य शुक मुख वाणी भ्रमर गुजार अभिराम ।
कुंज कुंज हरिपग पूजा हरि हरि नाम अविराम ॥ ३ ॥
मदनगोपाल मदनमोहन गोविंद गोप किशोरी ।
राधाबल्लभ रमणबिहारी गोपीनाथ गिरिधारी ॥ ४ ॥
दामोदर सुंदर माधव छैला रसिक विहारी राजें ।
घर घर घंटा झांझ मृदंग दर दमदमदमामो बाजें ॥ ५ ॥
पाँचों भोग पंचम शुभ आरती गंडकी नन्दनबाल ।
घर घर शुक मुख अमृत रस बरषें संतन कौ प्रतिपाल ॥ ६ ॥
बाल जुवक वृद्ध नर नारी वनदहिनो करि कीरे ।
वृंदाविपिन उर हार जैसी वैसी दीखे मन धीरे ।

या अंखिया में धरणी रूप दीषे है चित चिंतामणि राशी ॥ ७
थावर जंगम अमर नर तोज्जैक सुखमय विपिन वरवासी ॥८॥
पापी तापी काम कुचिल हूँ अति अपराधी मति मंद ।
जै जै वृंदाविपिन रस पाली तुम काट्यों भवबंध ॥ ९ ॥
बार बार जनम मरण भयो है बहु देश फिरि फिर आये ।
अभय पदाथर कहूँ नहिं मिल्यो अभय तुम हम पाये ॥ १०
वृंदाविपिन की करुणा ने जु पकर बाँध मोहि लाया ।
गौरनाम की रस चषायकै दीया है निज पग छाया ॥ ११
अब सुनो मनमोहन वृंदाविपिन रूप रस खान ।
हरि पग ज्योत वलित जहाँ नंदगाँव बरसान ॥ १२
मानसरोवर गिरिवर पूछतीन कौन अभिराम ।
वन उपवन कमल दल जेसी वृज मंडल रसधाम ॥ १३
सोडस कोश चौरासी कोश व्यापक मुनिगण गावें ।
करुणा करिकें जीव हित कारण आय धरे भुविकावें ॥ १४
चण्डाल चाप तैं तीर चल्यौ है घायल भयो सो जीव ।
तीरथ वा धरणी करि माने आधों छुट गयो शीव ॥ १५
पात पात में चतुर चतुभुज नारायण अविनाशी ।
परमेष्ठी परम पद देख्यों कमल कर लटक कटि वांशी ॥ १६
वृंदावन की धूल में धूसर हरि उद्धव अज शेश ।
व्यास नारद शुक रसिक कविगण बनें है एक देश ॥ १७
जोग माया जड़माया हरि की एक रस एक काट ।
जोग माया रस जोत रचना जड़माया जड़ ठाट ॥ १८
जोग माया हरिकर बंसी हलधर पूरणमासी ।
नाम धाम रूप गुण लीला नित्य है अविनाशी ॥ १९
पंचभूत सूं रचना रचें हैं जड़माया दई काया ।
मर्यो तन कूं लै लै डोलें वैसी वाकुं भाया ॥ २०

तैने पाया वाहि काया काम कुचिल सूं छाया ।
काया काया निरखत डोले कहा सुख तुम पाया ॥ २१
सुषमान नारितन धन क्यों डोलें मन भाई ।
हृदय मुकुर पै क्यों चढ़ाया सुख दुख झूठी काई ॥ २२
हरिनाम पाया विपिन वर पाया पाया गुरु पग छाया ।
गौर हरि लीलारस सिन्धु पाया क्यों नहिं छोड़े काया ॥ २३ ॥
काया काया करि हाया छुटाया घर घर भीख मँगाया ।
विषयी द्वारे क्यों तुम ठाड़े आपी आपकूँ खाया ॥ २४ ॥
हरिलीलारस पोट पीठ में ज्यों विजार दुंकारे ।
नारि धन तिनुका परम पदारथ निरखि निरखि हुँकारे ॥ २५ ॥
कैसें आये या जगत में तुम क्यों शरीर तुम पाया ।
चिन्मय तन तुम कहाँ छोड़कें काम कुचिल पै छाया ॥ २६ ॥
जो कीये सो कीये कीये सुनो सुमेधा बानी ।
अब चलो मन तहाँ तुम तो जहाँ राधिका रानी ॥ २७ ॥
अपनों नाथा जगजन त्राता वृंदाविपिन पै राजै ।
जोत पटल सब भुवि तरु तनुधर नागर गिरिधर गाजैं ॥ २८ ॥
गौर श्याम जुगल अंगन आभा छायो है वनमाहि ।
अपनो जन की आप बस है लीया है याहि माहि ॥ २९ ॥
गौ भूमि लता द्रुम सब हैं जोत भाव नाम तनुधारी ।
आप जोत जोत सब पशुकुल जोत गोप गोकुल नारी ॥ ३० ॥
कमर पै आई मकर बनाई बाई बाई पुकारें ।
जोत तब गौर हरिनाम या बाई सूँ सुधारे ॥ ३१ ॥
भली बुरी जो कहे दुनिया सो मति चित में चाखो ।
वृंदाविपिन में मन लगाय कैं राधे राधे भाषो ॥ ३२ ॥
कहाँ जनम आये तुम कहाँ देखो करुणा हरि की ।
जो दिन वृंदाविपिन पै आये सो दिन माया सरकी ॥ ३३ ॥

इन बातन कुँ तुम जानो मन हुँ जानू और राधा।
वृंदावन की करुणा बातें मिथ्या नरतन बाधा ॥ ३४ ॥
पशु पंछी अमरा नरा सबै वृंदावन बासी।
नमन चित तुम रमण करो मति करो उपहासी ॥ ३५ ॥
भीतर नमन सो काम की बाहर नमन पाखंड।
जै जै जै जै वृंदाविपिन की महिमा अद्भुत चंड ॥ ३६ ॥
सब कछु पाया जो कछु चाह्या एक चाहा है और।
श्याम गौर युगल पद पंकज निरखुँ कौनसौ ठौर ॥ ३७ ॥
सुनरे प्यारे नैन युग तारे बहुत सुन्यों तैं कान पै।
मेरी मुख कूँ जब तू निरखैं तब जायगो धाम पै ॥ ३८ ॥
वृंदाविपिन की करुणा मुकुर तामें छवि है मेरी।
गौर नाम रस चम्पू बगल में भैया छवि है तेरी ॥ ३९ ॥
चिन्मय और आनंदघन वृंदाविपिन दिखाया।
वार बारहूँ नाम रूप धरके तेरे चित मधि गाया ॥ ४० ॥
रोय रोयके हरि हरि नाम जब लीयो है तैंने।
तब तेरे छतियाँ भीतर प्रीतम धर्यौ है मैंने ॥ ४१ ॥
कर्म्महीन दारिद्र दुखिया स्वपच पापि अपराधी।
श्री वृंदाविपिन का पवन परस कैं गयो है सारे व्याधी ॥ ४२ ॥
अरे मन क्यों तन-भाव चित मधि विचारो कुचिल करम क्यों भावो
बजर लेप कूं दूर करेगो वृंदाविपिन वर आभो ॥ ४३ ॥
क्रूर जल सो सूर नदी पै अति पुनीत मिलि होय।
तैसें वृंदाविपिन परस कें जनम जातना खोय ॥ ४४ ॥
राख पोट कूं सरग चटाई ऐसी जननी गंग।
जीवत वृंदाविपिन परस कें क्यों न होय हरि रंग ॥ ४५ ॥
जै वृंदावन सुखमय सागर जै वृषभानु किशोरी।
जै जै ललित ललिता रस नागरी जुगल जात एकठौरी ॥४६॥

जै जै वृंदा गोविंद वर जाया जै जमूना पटरानी।
जै गोबर्धन राधावर सरसी जैं वरसानो रसखानी ॥ ७ ॥
जै नंदीश्वर नंद मनमोहन नंदगाँव अभिराम।
जै जै सरसी शिलाकुल तरु भुवि वन उपवन वृजमण्डल नाम ॥४८
जै जै विशाखा राधा द्रुम शाखा जै जै वृजदेवी वृजरानी।
उदर महोदधि उदय अच्युत विभु जस सिंधु जोति रविवाणी॥४६
जै व्रजराज राजेश्वर मण्डल श्रवण कुण्डल जस रासी।
जै महानंद उपनंद गोपकुल जै गोपीकुल वृजमण्डल वासी ॥५०
जै जै रोहिणी रोहिणीनंदन जै जै वृषभान दाम श्रीदामा।
सुवल तोककृष्ण कोकिल वृष मधु जै हरि सहचर नाम सुदामा
जै जै राधाजननी जग जन पाविनी कीरत नाम उजारी।
जै रस परिपूरण चंद्र जै वृज अधिदेवी जोगिनी वरनारी ॥५२
जै जै हरिवल्लभ लता तरु पल्लव जै जै खग मृग कोकिल केकी।
जै जै सारस सारसि हंस कुःकुटि मधुप भंकार अति सेखी ॥
तनु भाव हरौ मन भाव हरौ हरौ जगत सूं भाव।
तन कृत मन कृत पाप हरकैं मोह करौं रस पाव ॥
कुचिल विटल हुँ है विपिन वर तुम सब देखे नैंने।
वृन्दा विपिन का चरण सरण ते चित्त चाँद अति चैंने ॥
वृन्दा विपिन का शरण पाय कैं जो मन मलीन विलोला।
सो मन कूँ ऐसी तुम जानो जैसी वजर गुलेला ॥
वृन्दावन कूँ प्राकृत मानो हरि पग ध्यान लगायो।
जीवत राख की ढेरी है सोया विधि सुमेधा भायो ॥
अप्राकृत हरि नाम धाम रस लीला अप्राकृत हरि लींग।
अहो तू तो विन जान वकत है वाणी वढ़े पूँछ और शृङ्ग ॥
काम पटल अटल तनु पै क्यों हरि पग तुम ध्यायो।
वृन्दाविपिन पै कंठ खोलकें हरिलीला गुण गायो ॥

या कलि में नाम धाम गुण और हरि जन संग।
भागवत सुमेधा मिलि मिलाय कै तव उठे हरि रंग॥
देवी वृन्दा वृन्दा विपिन करुणा करैं है जाकुं।
तर्क अगोचर परम पदारथ आय मिले हैं ताकुं॥
आत्मानन्द ब्रह्म आनन्द और कोटि अमर आनन्द।
आक दूध सी स्वाद माने विपिन रसिकन वृन्द॥
कोटि कोटि वैकुण्ठ मथुरा और द्वारिकापूरी।
वृन्दावन की एक देश में वसत है कर जुग जोरी॥
द्रुम पटल हरि अवतार सब लता पटल सब देवी।
भृङ्ग पटल मुनिगण सब वृन्दावन की सेवी॥
काव्य पटल द्विज कुल रूप वेदगण कुंजन गैल।
धर्म पटल विपिन पैं गाउै ज्यौ गैल में वैल॥
कविगण वाणी वृन्दाविपिन पै ज्यों पुहप की ठाठ।
ब्रह्म द्योत रज रूप जहाँ कमला धोयें घाट॥
निरस वाणी सरस नहिं है ज्यों काठ पै चोट।
वृन्दाविपिन की अब छाया तें वा वाणी रस पोट॥
रतन जटित भुवि तरु वेदी आलवाल वल्लभ गोपी।
रतन जटित सुरभी कुल सरसी चिन्तामणि गिरवर कोपी॥
चित्र चीत कूट मणिगण जोत कोटिक हर्म्य विराजैं।
श्याम गौर छवि छायो कानन भरि मत्त शिखीकुल गाजैं॥
कुहु कुहु कोकिल सारस सारसि मत्त भृङ्ग तति डोलें।
रजनी रस लम्पट माधव माधवी शारी शुक मृदु बोलें॥
रे रे रे रे शुक शुक मुख आसव नारायण हरिजान।
ममचित भामिनी कमनी मुकुटमणि काहे सो करूँ पान॥
कालिन्दी रोधसि रोवत दिन निशि राधारति लम्पट राशी।
कुंज मधि सोवत राधाकुच कर कर कलित वर वांसी॥

नख विधुरेख कुचजुग मण्डन भामिनी स्वामिनी राधा ।
तिहारी शीश ईश शिखि शीश पर काहै कुरु चित वाधा ॥
भोजपति वक्ष वोझ अतिशय राधा अंक शयाना ।
मम तनु झूमत तनुरूह नाचत राधा उलट नयाना ॥
वृंदावन में नारि विषई कुं तुछ करि माने कामी ।
नमन होय कें गमन करें सो वैरागी प्रेमी ॥
सूरज सो सूरज दिखावे काम दिखावे काम ।
हरि रहे तो हरि दिखावे दाम दिखावे दाम ॥
सम रहे तो म्मम दिखावे यम दिखावे यम ।
अंधकूप अँधियारी दीषें भ्रमी दिखावे भ्रम ॥
आपन का दर्पन पै नाक कहो कैसें दीषें ।
जो जो याको तन में है सो सो याकों पीशे ॥
अद्भुत वृंदावन अद्भुत जमुना अद्भुत तरु दल पाली ।
अद्भुत गोवर्द्धन अद्भुत सरसी अद्भुत गोपति आली ॥
अद्भुत राधा किरणकुल आभा अद्भुत हरि की लीला ।
अद्भुत प्रेम तरंग रंग अद्भुत गोपी जुथ रस लीला ॥
अद्भुत नाम रसचंद्र सुधा कर अद्भुत हरिजन चित्त ।
अद्भुत सुमेधा वचन रस माधुरी हरत हरिजन पित्त ॥
अद्भुत नाम चम्पू रस माधुरी अद्भुत भागवत गीता ।
अद्भुत सो नर जो लगावे यामें अपनो चित्त ॥
विविध वासना तन धन नारि सब दूर करि डारौं ।
नमन होय कें चित्त चोर कुँ वृंदाविपिन पै मारौं ॥
दुर्लभ मनुषा जनम है दुर्लभ हरि की नाम ।
दुर्लभ भागवत वोध जन दुर्लभ वृंदावन रस धाम ॥
हरि वैराग दूर करी मन तनु वैराग तनु धारो ।
झूठी मन सो झूठ कुँ धावे ताह पकर तुम मारो ॥

नमो नमो विपिन वर वर हूँ हैं अति अपराधी ।
निज करुणा करि चित्त मधि आवो हरो भरम भूत व्याधी ॥
अजर अमर तुम वेद अगोचर शरणागत हित राशी ।
थावर जंगम तीर्जक खेचर दिव्य द्योत तव वासी ॥
कमठ नरहरि वामन शूकर हरि अवतार जेते ।
भुविरूह रूप रूप अद्भुत राम रघुपति केसे ॥
राधापग यावक जोत जगमग राधापग युग आभा ।
राधामुख किरण कोटि सुधा शशि शीत पीवत अजनाभा ॥
अधर रंग भृकुटि मनोहर नील कमल दल नैना ।
मुकुट कीर्ट कुंडल जगमग कुटिल केशघन चयना ।
अरुर मंडल भाल विराजत रतन वेशर अति उजियारी ।
कपोल जुग दर्पणदर्प मनोहर श्याम मनमोहन मोहिनी नारी ॥
अचीपर अच्युत श्यामर मंडल दशन ज्योत मणि मोती ।
कनक वेलफल श्याम कंचुकी उर उरज मोहन अति जोती ॥
कनक मृणाल लाल चित हंस रतन वलया वलि जोती ।
नवसर हार निरकी स्यमंतक सिंधु श्रव रतन गज मोती ॥
कंकण किंकणी अरुण नोलाम्बर तड़ित कोटि जयी आभा ।
केतकी कांचन केशर कुंकुम रूर भोग रति लाभा ॥
मुखर नूपुर रतन हाटक हंस कुल कंठ सुवाणी ।
वृंदावन तन राधावर जीवन रचित कृष्ण चितसानी ॥६५
इति श्री गोरनामरसचंपू षष्ठमांकः ॥६

सातवां अङ्क

अब सुनरे सुमन सुभाई । कब पेखुं हूँ रसवती राई ॥
या जमपूर वास रस आशा । सब छोरो जो रोचित भासा ॥
सो श्री परव्योम उपरि धाम । श्वेत गोकुल गोलोक नाम ॥
अद्भुत वृंदा कानन तहाँ । ज्ञान जोग गति नहिं है जहाँ ॥

साधारणि सामर्था समंजस नामा। तीन एक रति वर्त्ते है श्यामा॥
कमलापति धाम रति हीन जानो। भक्ति जोगजुत चतुर्भुज नामो॥
ब्रह्मजोति जिनकी तन कांति। ज्ञान रस मंडन भूलत छाति॥
जोग गति उपनिषद विचारा। एक पुरुष है सवै संसारा॥
श्री भू लीला पग जुग सेवैं। सवे चतुर्भुज बसत तजै वे॥
देवलीला युत गोलोक वासी। नर नटलीला पीवत है हांसी॥
चंचल रति तहाँ तीन विराजैं। अंतर ईश्वर भाव सूँ गाजैं॥
जोगमाया अब छाया है तहाँ। सरव महेश्वर भावत जहाँ॥
रति दृढ़ भाव पुन तीनों धाम। नित्य सनातन मधुपुर नाम॥
साधारणी मण्डित मधुपुर वासी। रमण परायण निज सुखराशी॥
द्वारावति अति अद्भुत धाम। समरति वर्तन दोउ सुख काम॥
वृंदावन में समर्था राजैं। श्री हरि अंश सखा सखि गाजैं॥
दौरें पकरें जननी जाई। उदर दाम धर ऋषिगण गाई॥
षट ऐश्वर्य किंकर हैं जहाँ। माधुर्य केत उड़ें हैं तहाँ॥
केवल मनुजा भाव विलास। भीतर बाहर राधा पग आस॥
व्रजमंडल है हरि जनानो। गोलोक धाम दरवार करि मानो॥
द्वारावति है सचीव का वेदी। मथुरा लिखि याहै सो भेदी॥
वैकुंठ कटक हरि फौज विराजैं। श्रुति मुखवाणी दमामो वाजे॥
अज अंड सब सैल कीवाटी। दया हाथी पै नहिं छोड़े माटी॥
सगरे अंड पै कुबुधि की वासा। सममेधा वैकुंठपुर आशा॥
रसमेधा मथुरापुर वासी। उज्वल मेधा द्वारकावासी॥
वृंदावन में सुमेधा जानो। अपनो भीतर आपकुं मानौ॥
कुमेधा नाना रूप दिखावे। जाते जनम मरण जीव पावे॥
सममेधा जब जीव पाया। मुक्त होय कें वैकुण्ठ कूं धाया॥
रसमेधा सो लग्यौ है जाय। हरिमुख देखिकें निज सुख चाय॥
उज्वल मेधा उभय सुखकामी। हरि आरामी पुन आप आरामी॥

समर्थं सामर्था हरिमुख चाहा । गोविंद गोकुल सुखदा हा हा ॥
धाम रति भेद सु ं श्रीधर रूप । सदा सनातन विहरे अनूप ॥
भाव रति नाम रूप है आप । रतिवंत जन कूँ करें हैं जाप ॥
परम आराम हरिजन चित्त । भाव रति रूप तहाँ है नित्य ॥
श्री कृष्णानंदा कृष्ण सुखपाली । श्री वृंदावन में राधिका आली॥
कृष्णनख कीरण जीवन प्राण । सदा राधा करत है ध्यान ॥
श्री हरि श्रीराधा पग उपासी । राधा गुण गावें अधर धर वाँसी ॥
राधानाम गुण जो जन गावें । ताकों श्रीधर अपनों करि ध्यावें ॥
राधानाम जपे दिन रजनी । राधा होय के कहे सुन सजनी ॥
प्राणप्यारे हरि है कहां । मोहे लेहि उन पग जुग जहां ॥
ढर ढर नयना गदगद वाणी । गोल कपोल दोउ नाचत जीनी ॥
नासामुक्ता अधर पर नाचे ं । तु ंग उर वहि चले नैन पाछें ॥
भीजत पीतपट किंकणी दाम । रसना घोंपत हरि हरि नाम ॥
हरिहरि नाम तें पुन सुधिआई । छप्रिगई असुआँ पुलकावलिकाया
मुरलीकर श्याम पीत वासा । राधा भाव हरि करत अति आशा ॥
राधाभाव सु ं द्रव्यो चित्त मेरी । काठ कठोर जो कंकण ढेरी ॥
राधानाम का भेद हुँ पाया । कृष्ण चित्त मन फुलि गई काया ॥
कृष्ण कृष्ण सो राधा मुख राजें । लाल नैन सो नील कुल भाजें ॥
राधानाम सूँ जो सुख मेरी । हरि हरिनाम सूँ कोटि गुण गोरी॥
हरिनाम रसस्वाद तव मिले मोहे । याहि श्याम तनु गौर जब होहै
सुमेधा सामर्था श्रीधर संग । कृष्ण चित्त नदीया वहुविधि रंग ॥

इति श्री गौरनामचम्पू सप्तमांकः ॥७॥

आठवां अङ्क

पंछीराज जा द्रुम बैठें ताह आकर बँध जाय ।
हरिनाम जो तनु बैठे सो तनु होय हरि काय ॥

पारस परस करिके कंचन होय सो लोहा।
हरि नाम सूं हरि नहिं होयहै वेद करेहै हा हा ॥ २ ॥
सूरज तेज सूं रात भजी है जगत करैं उजियारी।
हरि नाम सूँ जनम मौत सो हरे है अंधियारी ॥ ३ ॥
सूरज ताप सो चन्द हरे देखो या जगत में।
हरिनाम सूँ ताप नहिं जाय कैसी गति या भगत में ॥ ४ ॥
पानी पीकें प्यास भजे देखी या तन में।
हरिनाम सूँ काम प्यास क्यों ना छूटे मन में ॥ ५ ॥
काठ सो सुगन्ध हो है मलयागिरि की बातें।
हरि अनुरागी दुर्गंधी जी कैसी याकों जातें ॥ ६ ॥
कंचन मल आग धोये देखों जोत बाकी।
हरिनाम सूँ हृदय मेल नहिं गयो है याकी ॥ ७ ॥
पुण्य करिके पुण्यवंत सरग सुख भोग पावे।
हरिनाम सूँ क्यों ना जीव हरि घर हरिपग जावें ॥ ८ ॥
काम प्रताप सूँ कुच सुख भग कैसी मीठी भावे।
हरिनाम सूँ हरि गुण लीला क्यों नहिं भावे बाये ॥ ६ ॥
चाकरी करि करि तलप लेहैं देखो सूर सिपाई।
हरि हरि नाम दृढ़ तरवार सूँ हरि रति पावे भाई ॥ १० ॥
जम आया सो लै गया कौन छुटावे ताय।
हरिनाम जाकों लग परचौ ताकों भ्रम नहीं पाय ॥ ११ ॥
काठपुतली कुहक नचावे देखो या जगत में।
हरिनाम सुँ नरतन नाचे अचरज कहा या भगत में ॥ १२ ॥
काली सिर पें हरिपग धरचों गरल किया है दूर।
हरिनाम सूँ भव गरल भाई क्यों न होइगौ चूर ॥ १३ ॥
श्यौव तन स्यांप लपट रह्यौ है हाड माल भग राख।
वैसी कृपा हरिनाम दिखावे हरिजन तन पै लाख ॥ १४ ॥

भूख जाय और पेट भरे अन्न खाय खाय रंक ।
लोभ हरे हरि रस भरै हरिनाम करें निशंक ॥ १५ ॥
भूपति अपनों बस भयो तौ कहा पाजी कोतोवाल ।
हरिनाम रसना बस भयो तो कहा काल मतोवाल ॥ १६ ॥
लोलुप कूँ ललना घेरी कुच मुख नैन दिखाई ।
हरिजन कूँ हरिनाम घेर्यौ आप अपनों गुण गाई ॥ १७ ॥
बालकने पै रातिचरी कुं नहिं छोड़्यो है कान ।
शरणागत कूं कैसे छोड़े नाम अभय बलवान ॥ १८ ॥
पापी तन में गर पियालो एस्यो है हरिनाम ।
पुण्यवंत कूं परम पुनीत पूरें है सब काम ॥ १६ ॥
धर्म्मशील कूं शीतल लगैं हरिनाम उजियारी ।
काम जड़ की मन में नाम निपट है अंधियारी ॥ २० ॥
हरिजन कूं हरिनाम जैसी चंदन केशर शीत ।
रसिकन कुं रसमय नाम रूप धरे रस रीत ॥ २१ ॥
करकटा सो रूप पलटे लाल हरयो पीरौ ।
हरिनाम हरि रूप पलटें वेसी कारों पीरौ ॥ २२ ॥
जीव सुख दुख भोग करें नरतनु अपनों जान कै ।
हरिपग सुख दुख नाम दिखाऊे या तनु अपनों मान कैं ॥ २३ ॥
मेदिनी छोर मेघवरण हरि गये अपनो धाम ।
तेरी मेरी हित कारण रख गये निज नाम ॥ २४ ॥
नाम विमुख मोहि देखिकें गोपी बल्लभ भाई ।
पुन जनम लीये याहि भूम में नाम गौर गोसांई ॥ २५ ॥
नाम अवतार नाम रूप आप नाम रसना घोसें ।
नाम करिकें पतितन की पातक हरिलीये सब दोसे ॥ २६ ॥
पापी तापी कामी लोभी सबकूं कियो उन पार ।
तुम हम दोऊ कोरी रहै लग्यो है उनकुं भार ॥ २७ ॥

श्याम रंग पलट कैं गौर भये द्विजकुल कियो उजियारी।
सोडश नाम श्रीकृष्ण चैतन्य भाजि गई अँधियारी॥ २८॥
॥ इति श्रीगौर नाम रस चम्पू अष्टमांक: ॥ ८॥

नवम अङ्क

प्रीत रीत सूं दर्शन अब सुनो मेरो मन भाई।
सो कछु वर्णु जो कछु मोहि श्रीगौरनाम दिखाई॥ १॥
प्रीत वस्तु भगवंत है निश्चय करिकें जानौं।
प्रीत सागर ब्रजमंडल सब हृदि विचार करि मानौं॥ २॥
प्रीत नदी है द्वारकापुरी जैसी जगत में गंग।
प्रीत सागर झरणा रूप कुब्जा सूँ रतिरंग॥ ३॥
श्री बैकुंठ पै प्रीत सरसी माया में प्रीत झूठी।
मलंवासी झलक देहै लगैं मीठी मीठी॥ ४॥
प्रीत वस्तु लगन को कहिये जाय लगे सो मीठो।
तनक क्षीर रहे गयो है अपनो हाथ आप चाटो॥ ५॥
प्रीत जो सो उज्ज्वल पुनीत अवगुण नहीं बिचार।
जामें दृढ़ प्रीत लगैं सोई वस्तु सार आधार॥ ६॥
प्रीत दूती प्रीतम मिलावे प्रीत सूं प्रीतम बस।
प्रीत सूं प्रीत बंधत चले हैं प्रीत प्रकाशें जस॥ ७॥
प्रीत सागर का विंदु कण आया याहि जगत माहि।
वा प्रीत आप चित न धर्‍यों तनु में प्रीत सो नाहि॥ ८॥
चेतन अचेतन दोऊ मिल्यों है याहि तन में देखो।
अचेतन प्रीत कूं हर लिया है बाहर देहै लेखो॥ ६॥
सूर नदी का विंदु जैसी कूप सूँ प्राकृत होय।
प्रीत प्रेम सो काम भया है हरिपग दिया है खोय॥ १०॥
तन धन नारि जनक जननी पुत्र पौत्र सुत बेटी।
तामें प्रीत धर्‍यों है भाई घर आराम जन माटी॥ ११॥

देह इन्द्री सब निज निज चाहा ताहे प्रीत जाय लग्यौ।
प्रीत हीन हरि गुण लीला निरखि निरखि कैं भग्यौ ॥ १२ ॥
प्रीत जैसी शंकर वीज फट जाय सब काया।
वैसी जानो हरि बिना प्रीत सगरी झूठी माया ॥ १३ ॥
भागीरथी पै प्राकृत अंभ जैसो पुनीत मिल होय।
हरिपग प्रीत दृढ़ जब लगे तब ज्वाला सब खोय ॥ १४ ॥
प्रीत है उज्ज्वल प्रीत है कज्ज्वल प्रीत है आगशिशीरा।
प्रीत है दुर्गंध प्रीत है सुगंध प्रीत चंचल धीरा ॥ १५ ॥
प्रीत है प्रेम प्रीत है काम प्रीत जासुं लगावो।
भारतवर्ष है चिंतामणि सोई रस तुम खावो ॥ १६ ॥
प्रीत चिंतामणि परम पदारथ सो डारचो तुम भग में।
कहा विधि सुख पाये भाई या तन सूं या जग में ॥ १७
जाहे प्रीत करिये भइया सो उलट वैरी होय है।
बिन विचार जो प्रीत करें सो आपकूं खोय है ॥ १८ ॥
याहि प्रीत सों प्रेत है याहि प्रीत सों देवा।
याहि प्रीत सूं जनम मौत याहि प्रीत हरि सेवा ॥ १९ ॥
या जगत सब फूल बगीची प्रीत पुहप की पाली।
उर माला दृढ़ उर में धरयो आये हैं बनमाली ॥ २० ॥
इतर में जो प्रीत लगायो सुमन होयेगा दूर।
मनुषा जनम विफल होयगा दुरित होयगा सूर ॥ २१ ॥
काल कराल कपट कटक आय घेर्यो है तोहे।
हरिपग प्रीत परम सूर है सब जायगा सोहै ॥ २२ ॥
प्रीत पंथ अति दूर है उधो कूं भरमायो।
षट पद सूं जब प्यारी बोली तब उनसूं सरमायो ॥ २३ ॥
धिग धिग हरि का दास पनौ मैं अपनो जनम खो आया।
राधापग का धूर कनिका या रसना नहिं पाया ॥ २४ ॥

क्यों बके है वेद पुराण सनक जनक अनंत।
गोपी पग रज कैसी पुनीत कोऊ नहिं पायो अंत ॥ २५ ॥
धन्य केशव परम दयाल गोपीपग दिखाया।
धन्य मनुषा जनम है मेरी गोपी पग रज पाया ॥ २६ ॥
गोपी पग रज करुणा करें तब हरि प्रीत जाने दासा।
हरि मिल्यौ हरि में मिल्यौ झूठी हरि प्रीत आशा ॥ २७ ॥
कोटि बैकुंठ राधाचरण रज हरिकृपा करें जाय।
तन मन वेद पुराण अगोचर वा रज मिले है ताय ॥ २८ ॥
प्रीत पुतली गोपवधु है हरि अनुराग स्वरूप।
नमन होय कैं चरण रज कूं उधो चल्यौ रस भूप ॥ २६ ॥
भागवत में आसामहो ऊधोजी की वाणी।
चारि वर्ण का भाव दिखाये बिजुरी सी चमकानि ॥ ३० ॥
गोपी पग सुं प्रीत आया पुनगोपी पग कूं गया।
प्रीत प्रीत करि प्रेत डोलें हिलमिल झूठी काया ॥ ३१ ॥
राधा पग जब ऊधौ देख्यौ तब जान्यौ है प्रीत।
कृष्णतन में हरि प्रीत जैसी नट नाट की रीत ॥ ३२

॥ इति श्रीगौरनाम रस चम्पू नवमांकः ॥ ६ ॥

दशम अङ्क

सुख संदर्शन अब हूँ वर्णूं सुनो सुमन तुम कान।
जाह सुनकें रसिकन चित्त पै आवे रसमय प्राण ॥ १
आत्म सुख उभय सुख और आश्रय सुख नाम।
भक्ति सुख सब बैकुण्ठ व्यापक झूठी सुख और काम ॥ २
धाम अनुरूप सुख भोगी सब बहुधा सुख की रूप।
शुकल रक्त श्याम और प्रीत करकटा अनूप ॥ ३
छिन छिन करकटा रूप पलटे सो सुख या जग माहि।
शुकल सुख बैकुण्ठ भक्ति युत है तिनक बिछुरत नाहि ॥ ४

काजर वरण सुख विराजै शौरि मधुपुरि व्यापी ।
ललित लाल रंग द्वारका मधि सुख विराजें आपी ॥ ५
उज्ज्वल शीतल तपत हाटक ज्यों बृजमंडल सुख व्याप्यौ ।
सब सुख हरि भोग करे है तउ आपनहिं धाप्यौ ॥ ६
सत्ता चैतन्य जीव रूप धरके कुटिल सुख करें पान ।
त्रिगुण अज्ञान बीच व्यवधान आप अंतर्द्धान ॥ ७
उलटी रीत त्रिगुण दिखाई सुख कूं माने दुःख ॥
सुख सुख करके दुःख कूं धावे दुःख कूं कहे है सुख ॥ ८
खाय खाय कें मास बढ़ायो आप ढोवे है बोझ ।
बसन भूषण तनु विभव देखके सुख माने हर रोज ॥ ९
बा की विभब बहुती है मेरी विभव है थोरी ।
कैसी करके विभव होय है अब पूजो हर गौरी ॥ १०
भेड़ बकरा भैंसा बलि सूं माई हँसी है मन में ।
हरि विमुख रस भोग करो तुम वर दीया तेरी तन में ॥ ११
भैंसासी तनु फूल गयो है ज्यों बिजारसी डोले ।
कुच मुख भग कूं अति सुख मानकें अति असमंजस बोले ॥ १
मूंड कटेगो अंतर जाने तौ भी पर घर चोरी ।
लाय लाय धन सुन जन पोखें तोप करें निज नारी ॥ १३
सस्त्र बाँधकें भूपति संग आगे लराई लै है ।
धन सुख लीये अपनो जीवन तहाँ न्योछार देहै ॥ १४
तनु का सत्ता ओज वीज सब नारि संग में डारे ।
काल निद्रा कूं सुख मानकें सब देखें अंधियारे ॥ १५
शास्त्र पुराण इतिहास सुनकें रसना बोली राम ।
छतिया भीतर सोहन लगै घर बाहर निज काम ॥ १६
नारि मरी बेटा मरयो धन लीया है भूप ।
हरिबाना वैराग लीये अब डोलें भिछुक रूप ॥ १७

धन जन नारि सब कछु दीया प्रबल हरि का बाना ।
परम सुख भइया ताहे माता के घर घर हो है थाना ॥ १८
थावर जंगम तीर्जग खेचर तन जन सुख करि माने ।
तन झूंठा जन झूंठा कूँ नित्य सनातन जाने ॥ १६
सुखरूप होय कैं मौत घेरयो है करम फाँस है हाथ ।
वा दुख कौं सुखकर माने कहूँ न हिया का नाथ ॥ २०
अतिशय बोझ तनु अभिमान डार दिया जिन दास ।
या भूगोल है कहा बोझ हरि सुख जाको प्यास ॥ २१
शक्कर स्वाद शक्कर नहिं जाने वेद मकर बनाई ।
ब्रह्मानंद परम सुख है नाना भाँति उन गाई ॥ २२
अमर सुख अमृत रस पीके हो है मतवारो ।
सामराट अति चंचल सुख थिर नहीं अंधियारो ॥ २३
बैकुंठ सुख सरसी बारिवेला चारि मुकुत अभिराम ।
आतम आनंद रस नीर पीपी सबै चतुर्भुज वाम ॥ २५
बैकुंठ सुख शांत नित्य सनातन त्रिगुण सुख ते पार ।
हरि पग नागर शंत उर पै शौरभ शीतल हार ॥ २५
कावा हाथ राणी लुटाया विजय चाप है हाथ ।
गोविंद सुख गोविंद जाने है हरिजन की नाथ ॥२६
सरल शीतल सुख वैकुण्ठ पै कुटिल गति नहिं वाय ।
कमलाकांत करुणातें वा सुख या जीव पाय ॥२७
सुनरे मन तें ढीठ है राधिका रमन गिरिधारी ।
वैकुंठ रचिकें सुख भोग करें क्यों करें अंधियारी ॥२८
चारि रस चारि मुकुति इहां चारि भाव चारि हाथ ।
आप राधिका सुख रूपा श्री कृष्ण है कमलानाथ ॥२६
मेरी तेरी परम पदारथ सो हैं कमलाकंत ।
तनु मन कपट दूर जो होय तब पाये सुख अंत ॥३०

जगत जननी जगत जनक लक्ष्मीनारायण दोऊ ।
विष्णुप्रिया और विश्वंभर या दोऊ हैं सोऊ ॥३१
कहा जाने तें इन बातन कूं जाने भागवत गीता ।
बिना सुमेधा को आग बुझावे शिशिर करेगो चीता ॥३२
परम पुणीत सुख भोगी सब ईश्वर कमला कंत ।
जहां माधुर्य तहां रति वसैं माधुर्य बिन रति अंत ॥३३
त्रिगुण नरतनु उलट पलट ज्यों त्रिविधा रति सुख तहां ।
वैकुंठ उपरि श्री गोलोक है गोविंद राधिका जहां ॥३४
मधुपुरि द्वारिका श्री वृंदाविपिन लीला सुख दोउ पीवें ।
है परमेश्वर तोभी भइया वृज सुख रस तें जीवें ॥३५
वाल पौगण्ड किशोर किशोरी लीला रस सुख पान ।
विशेष करकैं रास विनोद सुख पान करें और ध्यान ॥३६
कमल पत्र परि नीर की वूंदा त्रिविध रति सुख जानो ।
प्राण प्यारी प्राण प्यारे या विधि गोलक थानों ॥३७
अव साधारनि रति सुख विचार धाम मथुरापूरी ।
आत्म सुख कुटिल भाव सुनो तुम मन लगाय कै थोरी ॥३८
त्रिवंका तनु कूज पीठ में सुधी सूरत बनाया ।
त्रिवंका सो भीतर रही सुधी नहीं है काया ॥३९
बाहर जैसी भीतर तैसी मोहि करो तुम श्याम ।
या छतियां पै सुंदर लगौ जैसी गरे की दाम ॥४०
पीत पट खैंची वचन हात लई सुख चिंतामणि रामा ।
हरि पग परस सुख चिंता में बूड़ गई सुख कामा ॥४१
सदा भीतर लपट रहे हैं बाहर सुख की चाहा ।
साधारनी है व्रजनिधि भरणा नित्य बहार है तहां ॥४२
गोलोक रमनी कौतुक कारण मथुरा में भई कुवरी ।
हिलिमिलि दोउ रगर झगर कैं पीछे भई है सूविरी ॥४३

हृदय आत्मा ताकौ सुख चाहें सुमेधा या गाई।
तन सुख चाहा सूं कृष्ण कब मिलें विचार करो मन भाई ॥४४
समंजसा रति रूढ़ भाव द्वारावती है धाम।
रति रसभाव एक होयकें रुक्मिनी महिषी नाम ॥४५
राधा ललिता प्रतिबिंब महिषी नंदादिक यादव जानो।
गोलोक मथुरा और द्वारावती व्रजमंडल बिंब मानौ ॥४६
रूढ़भाव सूं प्रीतम ढिंग विविध विरह सुख पीवें।
बादर सागर कुरूरी गिरि कूं बात कहि कहि जीवें ॥४७
विरह गायकें कृष्णमन पोषें तनु सूं है हरि साथ।
समंजसा या विधि उभय सुखदा विहरे द्वारकानाथ ॥४८
रूढ़ भाव कूं ऐसी भाव निरिखि निरिखि दव चलै।
जेठ ससुर कूं नव वधु जैसी लाज करें नहिं बोलै ॥४९
समंजसा रति आप लगे है श्री हरि पग पै जाय।
हरि कौतक सुनि कंप होय है विवस होय सब काय ॥५०
समंजसा सो हरि आधीना हरि आधीन है उनकी।
महीसी गीत परम प्रमाण हृदय धस्यो है जिनकी ॥५१
सत्यभामा सत्या भीष्मक कुंवरी सब राधिका अंग।
धाम रति भाव सूं श्रीहरि विलास हरिजन कूं रसरंग ॥५२
काम कुचिल जब नाम हरेगो तब रति या तनु आवे।
जुगल पद की जोत जब दीपे तब या रस गाय भावें ॥५३
अब सुनो कुचिल कृष्णनामी मन श्रीकृष्ण चैतन्य रस वीची।
जो रस सुनकै रसिकन मन नारि होय है नीची ॥५४
जोत पटल नाम रूप सब तरु गिरि गोकुल गोपी।
नंद यशोदा राधिका ललिता सखाकुल सगरे आपी ॥५५
भाव भेद रूप भेद सखा सखी अरु दास।
सामर्थी रति व्यापक बृजमंडल भरि हरि सुख की अति प्यास ॥

समर्थ सामर्था अति बलवान ईश अनीश करि देहै।
बाल वदन में भुवन निरखिकैं अधर चुंबि उर लेहै ॥५७
कालो मर्दन गिरिधारी अंश श्रीदामा पग धर्यौ।
प्यारी जू कूं अंश धरिकैं वन वन सुख सूं चर्यौ ॥५८
वछरा होयकें गौगन तन क्षीर कियो है पान।
परमेश्वर कूं लघू कर देहै या सामर्था बलवान ॥५९
देखो गति या सामर्था की षट ऐश्वर्य भगवान।
सब विभूति दूर कर दीनी निपट गोप अभिमान ॥६०
अनंत अज शेष अनंत शचीपति अनंत रुद्र सनकादि।
जो हरि चरण हृदय धरिकें सदा होय उनमादी ॥६१
अनंत शारदा अनंत वेद ऋषि जाकों गुण नित गावें।
वृंदावन में निशि दिन उनने राधापग कूं ध्यावें ॥६२
अनंत कोटि नारायण पलक नटन तें अद्भुत विभूति गाजैं।
सो श्री ललिता पलक नटनते धैरज पटल सब भाजैं ॥६३
आश्रय हरि उनकी सुख सूं सबकी सुख समाहारि।
हरिकी सुख निरखि आप सुख माने वृज औकसी वृजनारि ॥६४
विविध नद नदी निधि सूं मिलिकें अपनो नाम रूप छोड़ें।
नानादेश की नीर लायकें सब समुद्र में जोड़ें ॥ ६५
वैसी वृजवधु प्रथक सुख चाहा कबहूँ नहिं निरखें।
जुगल हृदय सुख हृदय आधार है जुगल प्रीत सुख बरखें ॥६६
थावर जंगम व्रजौकस जेते सब हरि सुख की चाहा।
प्रथक सुख कबहूँ नहीं है उन तन हरि सुख लीये करें हाहा ॥६७
तन सुख इंद्रिय सुख मन सुख त्रिविध सुख आकार।
आत्मानंद सुख जो है सो इन तीनन ते है पार ॥ ६
तन तन सुख परस्पर इंद्रि इंद्रि सुख इंद्री।
मन सुख मनोज विविध कल्पन जीव है तामें दौंद्रि ॥ ६९

याते परें आत्मानंद सुख जिन निज आत्मा देखी।
आत्मानंद सुख सोई जाने है परमात्मा सुख साखी॥ ७०
परमात्मा व्रजराज कुंवर उनकी हृदय रस श्यामा।
हरि सुख चिंता भीतर बाहिर हरि सुख दाहैं वामा॥ ७१
आत्मा हैं तिमिरमय गोफा जुग पग दीपक जानो।
मुकुर सुँ अपनो मुख दीखें आत्मा मुकुर जुग मानौ॥ ७२
आत्मा जो सो कहाँ है भाई या तनु काल मिठाई।
नर तन में आत्मा है काम वा सुख कूं इन मिटाई॥ ७३
नृपति हुकुम दई दो टूक करो ताको दियो है रस।
वैसी हरिगुण या तनु में या जीव है काल की बस॥ ७४
आश्रय सुख सूँ हरि आधीन हैं वा सुख रूपा राधा।
वा सुख कब याय मिले है या जोव सूकर और गधा॥ ७५
आकार निराकार राधा दिपे हैं आकार वृंदाधाम में।
निराकार चैतन्य बलित श्रीकृष्ण या जगत में नाम पै॥ ७६
अरे मन बार बार कहुँ हू राधा पग जब चाहौ।
दीन होइके गौर रस चम्पू सुधा धी अवगाहौ॥ ७७
या जीव घोर दुःख को रूप सदा जरे हैं प्राण।
गद गद होय कैं गौर गौर कहो और गौर पग करो ध्यान॥ ७८

॥ इति श्रीगौरनाम रस चम्पू दशमांकः॥ १०

ग्यारहवाँ अङ्क

अनुराग संदर्शन अब सुनो तुम मन मैंरे।
जाह सुनकें विविध वासना छुटि जायगो तेरे॥ १
अनुराग सो लाल ललित जैसी मंजिठी को रंग।
हरिपग कमल सूँ सदा लग रहै बिछुरत नहीं कभी संग॥ २
रागमय गोपी और गोपकुल कमल नैन पदरागी।
लाल अधर सूँ लाल मुख चूँबत लाल हृदय अति भागी॥ ३

वसी लाल हृदय तुम करौ गोपी पग पहिचानो।
इन तनुतें उन तन पहुँच्यो करो गोपी पद थानो ॥ ४
इन तनु बातङ्हा कहो तुम पुन तन नख वर लावो।
कहा करे हैं प्रीतम प्यारी सो सब मोहि सुनावो ॥ ५
दीनबन्धु जीव हितकारी करुणामय बपु दोऊ।
हूँ अति पातकी अति अपराधी सहनशील भू सोऊ ॥ ६
गुरु अपराधि भक्त अपराधी बंचक ढीट कहु वाणी।
कहा विधि मोहे दया करेंगे गोविंद राधिका रानी ॥ ७
काठ कठोर ज्यौ पत्थर चित्त है नेक रसना नहिं याय।
कैसे करकें वा पग जुग या जीव कहो तुम जाय ॥ ८
नीच कुल जात नीच करम सब नीच भाव कुल बलना।
कहा मोहे करुणा करेगी हरि मोहिनी ललना ॥ ९
साँच कहो तुम पापी कुल जेते म्लेच्छ स्वपच जगाई।
राधा पग कूं सब गये हैं श्रीगौर पग निरख कैं भाई ॥ १०
अब अवनी सूनी है गौरपग विहीना धरणी।
अब या जीव कहाँ जायगौ को है या का शरणी ॥ ११
पेट पेट करि सदा मरे हैं नैक धीरज नहिं पाय।
ब्रह्मादिक दुर्लभ परम पदवी या जीव कैसें पाय ॥ १२
शची सुत आनन शरदचंद ज्यों राधारस मंडल ज्योती।
वा सुख कूं इन नहिं निरख्यो नैनधारा गज मोती ॥ १३
चंचल तन मन नैन चंचल चपला कुच अनुरागी।
मदनमोहन मद मादक रस का कहा विधि होय है भागी ॥ १४
बजर लेप तीरथ पाप ईन कौन छुटावे भाई।
विविध रस तुम हम मिलिकें विविव उपाय शुभ गाई ॥ १५
भीतर द्वीतिया इन जीव छतियाँ निहचाय कियो है दूर।
हरि पग प्रीत कूं दूर करकें आप भयो है सूर ॥ १६

आप काजर या जीव काजर देखों भूत कौ थानौ।
हरि बाना कूं भूठ करे है बाँधे अपनौ बानौ ॥ १७
हरि अनुरागी रसिक जन संग या जीव नहिं पाया।
या को तन में धसी है भाई हरि विमुख दृढ़ माया ॥ १८
तुम जानो हम जानू और जानें अंततयामी।
काहा छल तें या तन आयकें हरिजन कूं कीयो कामी ॥१६
हरि अनुराग परम अनल है लिंग तन जासूं जरैं।
तब या जीव हृदय कोश पै हरिगुण नाम रसचरैं ॥ २०
गद गद कंठ नैन जल धारा विपुल पुलक कुलपांती।
हरि वियोग जब याय धसेगो तौ तो खोलें इन छाती ॥२१
हरि वियोग परम अनल है सकर्षन मुख आग।
कपट गहन कूं दहन प्रबल श्रीहरि पग अनुराग ॥ २२
गोपी पग रज शीश परै जब तब अनुराग इन पावे।
हरिगुण नाम लीलारस माधुरी मधुर मधुर ध्रुव भावे ॥ २३
ललित त्रिभंगी राधा रस रंगी माधव माधवी दोऊ।
द्विजकुल भूषण देव जनार्द्धन अबनी पग मंडन सोऊ ॥
परम उदार धीर ललित तन कांचन द्रवजीति जोती।
मदन मोहन वदन सुधाकर दशन ज्योति गजमोती ॥ २५
तुंग उरू देश शिशिर कलाप कमल नैन रसधारा।
कनक गज भुज भुज अति गोल गोकुल रमणी सुभ सौरभ हारा
मत्त गजराज गमन अति मोहन थल कमल पगद्वन्द।
नव मणि किरण कपटकुल भाजत केते कोटि सुधाकर चंद ॥२७
जीव हितकारी करुणा बिहारी पामर पतित करें कोर।
गद गद कंठ कुबजी मन मादक का गति कृष्ण चित चोर ॥ २८
चिन्मय रूप आनंद रस घन प्रेम पियासी सुखराशी।
सो तन छोर चोर जैसी दवकत नरतन नरक कपासी ॥ २६

तप्त हाटक थीर तड़ित ज्यों मदन मन मोहिनी रामा ।
अब सो तन भूल मूल छेद सूं प्रकट नट नर तनु कामा ॥ ३०
नील कमलदल वाम विलोचनी नील बसन बर वेणी ।
सो तन ब्रह्म प्रकाश परात्पर इन तन कपट दुःख श्रेणी ॥३१
चन्द्रक जोति बोझ अति कर्क्कस सो तन कमनि किशोरी ।
या हाड बोझ शीश अब ढोवत श्रवत निति नव मोरी ॥ ३२
जुग पग प्रीत शीत अंतर अति अतिशय भासिनी भावा ।
नरतन काम काल जम राजत रोग कदन कुल लाभा ॥ ३३
बकरिपु मानस भाव अति पंडित सो तन अतिव चतूरा ।
नर नारि भाव भावत इह तन ढोवत बोझ मजूरा ॥ ३४
मृगमद चंदन केशर सौरभ सो तन सौरभ पाली ।
घ्राण विचिक्रिल्लक इह तन सौरभ भाजत बने वनमाली ॥ ३५
रसना हरि रस नाम गुण लम्पट तुष्ट पुष्ट सो तन धीरा ।
मृणमय विविध रसना रस पीवत जरीभूत इह तन शरीरा ॥ ३६
नित्य निरंजन अच्युत पद इव सो तन राधा पग आली ।
अध्रुव दशा दश मंडित इह तन अनित्य भ्रम पट पाली ॥ ३७
सो तन देव शचीसुत कृत या तन करम वनाया ।
सो तन भाग्य कृष्ण पग पंकज पालन भाग्य भ्रम माया ॥ ३८
सो तन वास नित्य धाम पै या तन भारथ माहिं ।
सो तन मगन फूल फूल डोलें या तन रोवत नाहिं ॥ ३९
सुखमय शुक संहिता हरि रस गीता नैक बोध नहिं पावै ।
घोर गहन पै जनम अंध जैसी लकुट हाथ जब धावै ॥ ४०
भोभो सुमेधा सुमन अति वोधा परम मंगल हितकारी ।
जीव जीवन चैतन्य भास्कर जुगल किशोर रसधारी ॥ ४१
कपट कपाट कदन कुल मर्दन केशव पगजुग वासी ।
हरि पग जो रूप जुगतन जुगल जोत अविनाशी ॥ ४२

दुर्ल्लभ नरतन अतिशय शोभन अच्युत तन उनिहारी ।
हरिगुण नाम रसना रटत निति श्रवण पूट हितकारी ॥ ४३
केशव पग जुग अंकित धाम नरतन बास सो पाया ।
या तन छोर छोर मुह वदसी हम कैसी छोरूँ यह काया ॥ ४४
गोपतिनंदन हृदय रसायन ललित त्रिभङ्गी मुरारी ।
या तन ढूंडत नैन रस बल्लभ घातसी वचन कुठारी ॥ ४५
या तन छोड़कैं सव अंध्यारी मोहे दीखें हैं सुमेधा ।
हरि हरि या रसना रटत है और तन जड़ कुमेधा ॥ ४६
या तन राख सो हम जानूं भरोसा रखूं हरिनाम की ।
पापी तन ब्रजधाम पाया और भरोसा धाम की ॥ ४७
और भरोसा गौर हरि लीला और भागवत गीता ।
और गुरु मुख बानी भरोसा और सुमेधा चीता ॥ ४८
और भरोसा बहुधा भीतर सो सब सुमेधा जानो ॥
कैसे करकें या तनु छोडूं देव गौर हरि थानो ॥ ४९
या तन ने बहु दुःख पाया रोग शोक मद मान ।
काम क्रोध त्रिगुण त्रिताप तैं मुरुझर होत न प्राण ॥ ५०
सुमेधा जो तन वलि भई है सो तनु क्यों अंध्यारी ।
सूरज आगें रात लरे हैं दिन कूं रात दै मारी ॥ ५१
क्यों छलो हो या तनु कूं तुम अपनों पग देखावो ।
तुच्छ तन पै हरि अनुराग वैसी विधि कछु गायो ॥ ५२
अरे जीव तू हरि अंश है सूरज किरण जैसी ।
सूरज विहीना जगत अंध्यारी हरि बिना तुम वैसी ॥ ५३
राति जो सो अति भयानक तन धर निद्रा जावै ।
कृष्ण बिना अरे जीव तू अपनों मास आपन खावै ॥ ५४
तेरे लिए हरि नाना तन धरि नाना रूप दिखाया ।
काया माया करि जडित वलित है सो पग नहिं तें पाया ॥ ५५

थावर जंगम कोटि कोटि तन करम धरायो तोहे ।
या जनम में श्री हरिनाम यैं चलीयो है मोहै ॥
हरिनाम नै जड़ छुटाया संवत्सल सुधार्णव सुनो ।
राधा पग परम आति हूँ आप आप कूं मानौं ॥
तन रूप होयकें मन डोलें है सो तन कूं तुम छोरौ ।
नरतनु दुर्लभ परम पुनीत है हरि अनुराग इन जोरो ॥
दोय भुज उठायो गगन पै धरो राधानाम पुकारो ।
आउ आउ कमल दल लोचन हुँ हुँ हुँ हुँ कारो ॥
तुम पग छोरकें कहा हूँ है तुम दोऊ नाथ कहां ।
या नरक कूप में हूँ फस्यो है तुम तारो नाथ हा हा ॥
स्थूल शरीर सूं कुबुधि होय है ज्ञान रहित होय जाय ।
जौ वी या तन सब गुण हीना उत्तम मानूं निज काय ॥
पंडित नहीं हूँ पंडित मुद्रा या तन सूं दिखाऊं ।
भावुक नही हूँ भाव रस माला जन जन कूं सिखाऊं ॥
रसिक नही हूँ लीला रस कौतुक या सुख सूं करूं गान ।
काम तन मैल पट रह्यौ है आँख मूंद करू ध्यान ॥
आदि अंत नाथ तुम सब जानौ पलक पलक की बात ।
स्थूल शरीर सूं तन धारी पै सब बुधि नहिं हे नाथ ॥
दया करौ पग जुग धरौ या अंखिआ के आगे ।
सो सुख दिखावो जो सुख कूं गोपी करें अनुरागैं ॥
प्राणवल्लभ या तन जीवन हरिजन मादक रूप ।
रूप स्वरूप गदाधरवल्लभ सनातन रघु भूप ॥
शचीस्तन रस जो मुख पीये सो मुख हूँ कब देखूं ।
बाल पनौं तैं आस करिकैं या तन कूं हूँ राखूं ॥
वृंदावन रस भागवत रस दोउ मिलि तुम किये नाम ।
हम पापी की रसना रटत है वाहि नाम गुण गाम ॥

सूक्ष्म मधि जीव है सूक्ष्म आप श्री मुख तैं गाया ।
वा जीव कूं कैसी घटी है स्थूल अमंगल काया ॥
विजय वल्लभ ऊधौ हितकारी प्रथा सुत मादककारी ।
पांचाली तनु वसन तुम आप भये गिरिधारी ॥
गज तन तुम वलित भये शवरी बेर फल खाये ।
काली फण पै नाचत नाचत घर घर भीख कूं धाये ॥
आप आप में रमण करौ हौ गौरश्याम वपु होय ।
कुंज कुंज में जुगल विहारी अब कहां रह्यौ है सोय ॥
सौरभ पायकैं भृंग उड्यौ है कमल दव्यौ है नीरें ।
तृसित चातक जलधर निरखें चपल समीर नहिं धीरें ॥७३
चंद्र सिंधु मण्डल चकोर देखकें अतिशय आंख पसारें ।
राहू मंडल आयकै लिगिल्यौ जग भयो अंधियारों ॥७४
अनाथ जीवन दीन हितकारी अशरण वल्लभ नाथ ।
शरणागत तोष पोष सुखदायक व्रजवधु मंडल जात ॥
राधा मुख सरोज मत्त मधुकर कमनि कुल गोकुल मोद ।
कलहंस गामिनी मत्त महोदधि अकिंचन चित्र चित बोध ॥
कालिंदी रोधसि कमलाकुल मंडन नट नर तिरण वीर ।
विभानु भानु तनया तन कंपक हरिजन संपद धीर ॥
चलाचल चेतन चित्त रसायन रति पति मर्दन कुंज विहारी ।
केलि कलाकुल खंडित मनोमथ पंडित मुगध मुरारी ॥
करभोरू कुचजुग मर्दक चंचल करि कर सिंधु विधु पाती ।
पीत पटांवर मुकट कुंडल मुख मुखचुंवन मुकलित छाती ॥
त्रिनयनी नयन मादक रसना रसधारा मोद स्वर धारी ।
मुरली अधरधर लोल नयनांचल शरणागत पोषक रसिक विहारी॥
गोकुल आकुल व्रजरमणीकुल लोचन प्रेम रस वारी ।
अक्रूर रथारूढ़ि जोत प्रदर्शक शेष विभूषण कौस्तुभधारी ॥

रजक रज नाशक मधुपुर मंडन कुबुजी मादक रासी।
सुदामा दाम धर धनुक विभंजक बृजपति वाटी सुवासी।
कुवलय कुंभ विदारक रदधारक रंगभूम कंपक चाणूर वैरी।
अद्‌भुद रूप रस पोषक बृजवल्लभ मंडल नर्तक सौरी॥
कंस विमर्दक केशकर कर्षक तात मात पद गामी।
व्रजपति मोहन विविध उपायन यदुकुल मंगल कामी॥
गुरुकुल मंडन दीप्त उडु गणपति मृततनु कर्षक दाता।
उद्धव प्रियहित व्रजवन दर्शक व्रजवधू हृदय रस जाता॥
मगद मद भंजन पुन पुन कर्षक पांडुकुल मंगल कामी।
कालजवन जम मुचुकुंद चेतन यदुपुरी द्वारावती गामी॥
भीष्मक नंदिनी कर कलित पीतांवर गरुड़ारूढ़ि चापविहारी।
रुक्मी शिर रूह गण मुंडन परायण रुक्मिनी वदन निहारी॥
भल्लुक नंदिनी वरस्यमंतक मनिधर सत्राजित कुंवरी करधारी।
भास्कर नंदिनी कर मोहन मादक राजनंदिनीगण मोहनकारी॥
मित्र विंद्याकर वरमाल विधारक नाग्निजितीवर सत्या सत्वराशी।
भद्रा भद्रतम भूमि सुतनाशक मुररिपु दिवि बनवासी॥
जरासुत नाशक प्रथासुत मादक पृत्थिपति गण मुदकारी।
भक्त महोत्सव उत्सवकारण सुदर्शन धर चैद्य शिरहारी॥
सौभ विदुरथ दंतवक्रहर शीतज्वर कर वाण भुज वैरी।
नारद मोहन चित्र लीला धर भुवन भार हर अजपति शौरी॥६१
वाङ्मय चित्ररूप प्रकट आप हमें अगम्य वोध नहिं पाया।
पुन अति करुणा वपु आय प्रगट्यौ गौड़ मंडल सुख छाया॥
भक्त भाव सूं भक्त मन पोषकैं जुक्त भये निज धाम।
तालध्वज गरुडध्वज तुम या अखिला का अभिराम॥
मृतक शरीर पै चेतन कहां हरि अनुराग जब होय।
तब जायगो या तन ज्वाला मन रहेगो सोय॥६४

दीन भाव सूं सब दोष हरे उज्वल करें हैं छाती ।
हरि अनुराग सूं हरि पग दीषें जैसी घर की वाती ॥
इति श्री गौरनामरसचंपू एकादश ांकः ॥११

बारहवां अङ्क

ज्ञान संदर्शन परम अद्‌भुत या आत्म तत्व प्रकाश ।
जाहे सुनकें श्री कृष्ण पग अपनौ चित्त विलास ॥
चिद्‌घन चित्‌कण एक जाति है एक वृहत एक छोटी ।
एक आकार एक निराकार एक सूक्ष्म एक मोटी ॥
अनल चुनगारी एक जान अग्नि पुंज अग्निकण ।
एक विलाडे एक प्रकाशे वैसी हरि जीव तन ॥३
एक सागर वहुधातरंग देखो सागर माहि ।
विचार जोग सूं नीर बिना भिन्न तरंग सो नाहिं ॥४
सूरज सूं सूरज किरण मंडल आपतें होय ।
जब प्रातें उदय करें तब रजनी रह गई सोय ॥५
एक ब्रह्म एक परब्रह्म जैसी शरबत मिशरी ।
एक जल सूं मिलि रह्यौ है औरु ढेरी है दूसरी ॥६
एक आत्मा एक परमात्मा एक ईश एक दास ।
एक निबल एक है प्रवल एक निरासी एक आस ॥७
एक खाय एक नहिं खाय एक चपल एक थीर ।
एक सुखी एक दुःख रूप है एक कायर एक वीर ॥८
एक मानी एक अमानी एक भोगी एक जोगी ।
एक मौनी है एक बतावना एक रोगी एक वियोगी ॥९
एक शांत है एक अशांत एक तन में एक मन में ।
या विधि विचार रखौ भीतर तुम सुख पायो या तन में ॥१०
निद्रा जोग सूं ज्ञान की लोप मन विलास है तहां ।
कहूँ रमनो सूं रमण करे है अजगर निगिल्यौ हा हा ॥

रमनी झूठी अजगर झूठा झूठा भोगी सो मन ।
रुव झूठा होय सो सब जब चेतन आवे तन ॥१२
जद्यपि वीर्ज स्खलित भो पूरव अभ्यास मानौ ।
सो मन लिपिट्यौ नरकाया सूं भ्रम पटल को थानौ ॥१३
आत्मा चैतन्य निद्रा नहि भोगैं सदा जाग्रत रूप ।
नृपति है हाथी ऊपर देख्यौ भेड़ परयौ है कूप ॥१४
भेड दुःख कूं भोग करे हैं नृपति देखन हारौ ।
वैसी निज आत्मा जानौ मन भेड कूप न्यारौ ॥१५
या तन कूप पानी विषय मन भेड दुःख भोगी ।
या विधि विचारि मन कूं छोरौ आपकूं मानौ हरि जोगी ॥१६
मन विलास सब भीतर बाहिर त्रिगुण त्रिताप उर्म्मी ।
या जग भरकैं मन व्यापौ है मन धर्म्मी और कर्म्मी ॥१७
जो बाहिर सो भीतर रहै भीतर जो सो आंखि में ।
भीतर दुर्गन्ध जो है भाई बाहर सो या नाक में ॥१८
मन माया कपट पटल है भवसागर का रूप ।
याऐ त्यजौ तुम वाए निरखो वा रूप है अनूप ॥१९
तनु अभिमान मन करावे तनु का रूप मन धरै ।
भूत पेट में नाना मिठाई खाय खाय मन वरैं ॥२०
ज्ञान सूं अज्ञान भाजे जैसी सूरज राति ।
ज्ञान धन सू जाति पांति पाया या कृष्णनाम अजाति ॥

इति श्री गौरनाम चम्पू द्वादशांकः ॥१२

तेरहवां अङ्क

अनुभव आनंद परम आनंद अनुभव दर्शन नाम ।
भगवत नाम चितमधि मथिकैं अब सुनो अनुभव गाम ॥१
हरिलीला गुण नाम जब सुनो और अपने चित्त सूं गायो ।
चित जाय तासूं जब लगै तब सुख तुम जो आओ ॥२

पशुवत आचार करो तृण खाय पेट भरें।
पेट सूं उगार चावैं फेर पेट में ले भरें ॥ ३
जीव तन में चितघन आनंद सागर तरङ्ग की छींटा।
नाम लीला सूं आय परचौ है अतिशय जोत अति मीठा ॥ ४
काम सुख अरु उन सुख दोऊ सुख मन तुम देखौ।
कोहै दाहा कोहै शिशिर को मलिन उज्ज्वल लेखौं रखौ ॥ ५
मन आय कै नरतन नारि पकर लीया है भाई।
चित जायकें वासूं लग्यौ देखो वंदना सीचे ताई ॥ ६
अरे जीव तू चैतन्य है वा मन कूं जड़ जानौ।
जड़ जड़ सूं सदा विहार है नर तन जड़ करि मानौ ॥ ७
फूटी मुकर पै बहु मुख दीखै मुख सो एक विचारो।
नाना मत तुम दूर करकैं एक मत मन धारो ॥ ८
कुमन जायके तन सूं लपटे सुमन हरि पग भोगी।
तन भाव कूं कुमन ढोवे हरि भाव सुमन जोगी ॥ ९
मायातीत है सुमन सुमेधा प्यारी प्रीतम संग।
जो जीव हरि पग ढूड़त डोलै वाय मिले उन अंग ॥ १०
सुमन सुमेधा उत्तर प्रत्युत्तर अनुभव आनंद सुनो।
धन्य धन्य नरतनु सुफल है आप आपकूं मानौ ॥ ११
नरतन सूं कहा सुख कहो द्वैत भ्रम की नाश।
कैसी नाश होवैं भाई श्रीगुरु श्रीपग पास ॥ १२
नाम रहतें नर क्यों दुखिया भीतर पहचान सुनी।
कब पहचान होहै भाई साधु पग जब जानी ॥ १३
को है साध या कलि में निश्चय कर कहो मोकूं।
आप परमेश्वर दास भाव सो साधु कहूँ हूँ तोकूं ॥ १४
अब कहाँ वै नाम रूप है प्रकट रसना पीटें।
कहा करें हैं शरणागत की विविध वासना मिटें ॥ १५

या काया जीव क्यों पाया हरिनाम रस पीयो ।
बा काया सुं नहिं होहै या काया क्यों दीयो ॥१६
होहै कैसी सूरज मंडल जैसी जल घट मांही ।
जोत और रस दोऊ मिल्यो है ताप तासूं नाही ॥ १७
विना दुःख सुख कहा जाने दुःख में सुख कूं गावें ।
हरि रस सुख नित्य गाय गाय कैं वा सुख या जीव पावें ॥ १८
कहा विधि गावे हा हा नाथ ब्रजपति हृदय बिहारी ।
जसोमतिनंदन राधारस जीवन राधारमण गिरधारी ॥ १६
हा हा कमनी गोपी मुख मधुपी कमल नैन अभिराम ।
हा हा राधेश्याम मन मादक श्याम नयन अति वाम ॥ २०
कुंडल जोत गंडजुग पै कुटिल कुंतल वनमाली ।
वक्त्र मनोहर अधर बिम्बफल इतत कच कुल पाली ॥२१
त्रिभंगी अधर पर मुरली मनोहर कौस्तुभ रतन केकी दल धारी ।
पीत पटाम्वर गुंजमालधर मणि मंजीरधर चरण जु चारी ॥
मत्त अलिकुल पगजुग चुम्बत श्रीराधामुख चन्द्र चकोर ।
ढर ढर लोचन प्रेम रसाकर ब्रजरमनीगण नयन झकोर ॥ २३
सिंचय सिंचय रसना चालक नटवर गौर मुरारी ।
सो अति कृष्ण कमठ पिठ चित्त द्रवयत शरण तोहारी ॥ २४
रूप अनुभव भाव विषयकुल भावय सुमन विवेकी ।
दुहुक मनोभव जोति रस मंडल पिवत दुहुँ अशुएकी ॥ २५
नरतनु धारी रसिक बिहारि नर रस पीवत आपी ।
भोज वृष्णीकुल पावन यदुपति ताप विनाशन उद्धव तापी ॥ २६
हूँ अति पामर ऊधो चित मंडित त्रिनयनी रसमय माला ।
हृदि मधि धारत रसना नचावत दुरिकुरु हृदि कटु ज्वाला ॥२७
जोनी मुख उद्भव जो तन दृशिपथ सो तन अनुभव सूनी ।
गौरहरिनाम में अंकित इह रस सुमेधा वक्त्र रस दूनी ॥२८

त्रिगुण मिटाइकैं निर्गुण होइकैं दुर्लभ हरि पग जानों ।
एकादश गीता जो कछु गायो निर्गुण पदार्थ सुख वानों ।। २९
तुच्छ जीव को चित्त नहिं पहुँचे सुनो अनुभव और ।
या तन में जो कृष्ण आयें निरखुं याहि ठौर । ३०
धरयौ रहै तौ गुण गण विचार आत्म तत्व और ज्ञान ।
मरयौ तन में आयौ आत्मा तब विराट तन सावधान ॥ ३१
वेणु शरीर कूं मथन करके पृथु जु अर्चिराणी ।
वाहि भाँति या शरीर सूं हरिगुण रसीली वाणी ॥ ३२
कबलौं रहैंगे आपकूं छिपाय परमानंद रसधाम ।
अरे जीव तुम रसना पुर बसावो गौर गोविंद नाम ॥ ३३
अनुभव पटल आनंद अटल श्रीकृष्ण चैतन्य नाम ।
कृष्णदास की हृदय सरोज में अंकुर अनुभव गाम ।। ३४

।। इति श्रीगौरनाम रस चम्पू त्रयोदशांकः ॥ १३

चतुर्दश अङ्क

चक्र संदर्शन अब सुनो सुमन तुम और ।
या बात कूं गौर हरि जाने ऊधौ की शिरमौर ।। १
वाणी चक्र में वाणी चलें पाछें चले है मन ।
अति वेग वाणी चले है मन की गति कछु कम ।। २
वाणी की बल हरि रस आसव तन रस मन सो पीवे ।
वाणी खुलासा बोझ नहीं है मन सो बोझ कूं ढोवे ॥
मन संग जीव चलें हैं हिलमिल दुःख सुख भोगी ।
आगें वाणी जलदी गई पीछे चल्यौ दोउ रोगी ॥४
वानी जाय मुकाम पहुँची मन भूल्यौ सो गैल ।
अबलौं नहिं पहुँचौं भाई देखो दोउ या बैल ॥ ५

।। इति वाणी चक्र ।। १ ।।

मन चक्र एक और सुनो ध्वान्त पल अभिराम ।
चित्त भीतर रचना रचे हैं नाना विधि सुख काम ॥ ६
संकल्प और विकल्प दोऊ करे हैं मन भाई ।
होनी अनहोनी काम कूं मन रचिकें दिखाई ॥ ७
संकल्प जो सो होनी काम तन ते जो कछु बने ।
विकल्प सो अहोनी काम जो नहि बने है तने ॥ ८
विहा करों बेटा भयो विविध भोग बधाई ।
और करौ और होवेगौ संकल्प मन दिखाई ॥ ९
विकल्प सो अनहोनी है मरयौ पुत्र कूं चाहा ।
मरयौ पूत कूं बिहा करावे रंक नृपरानी सूं नेहा ॥१०॥ इतिमनचक्र
तन चक्र एक और सुनो याहि भारत माहिं।
निद्रा सूं उठिकें नाना काम करें मन सूं भाई ॥ ११
सुकर्म्म विकर्म्म तीरथ अटन व्यवहार कूं ध्यावें ।
कहूँ सुख भोग करें जीव कहुँ दुख कूं पावें ॥१२॥ इति तनचक्र
माया चक्र एक और सुनो मन लगाय कै आप ।
कृष्ण विमुखता जीव कूं कर्यो याहि वाको जाप ॥ १३
त्रिगुण त्रिताप रोग शोक मद मान दंभ बड़ाई ।
काम क्रोध लोभ लोक रंजन अपनों जस आप गाई ॥ १४
निद्रा सुप्त जाग्रत राग द्वेष मत्सर आदि ।
या विधि माया चक्र है जीव होय उनमादि ॥१५॥इति मायाचक्र
तन चक्र सो कर्म चक्र है देवी चक्र सुनो और ।
अस्ति नास्ति नास्ति अस्ति जलदी करे है दौर ॥ १६
बरात चल्यौ है विहा देनो वर कूं खायो स्यांप ।
विविध भोजन आगे धरी है जब आयो अति कांप ॥ १७
नाहान चल्यो पानी पै ग्राह पकर सो खाया ।
बिना रोग अति जलदी छुटि गई है काया ॥ १८

हुंडी रुपया घर पहुँच्यौ चोर आप हरि लीयो।
जो जो काम आगे दीखे दैव चलाय सो दीयो ॥१६
धन की चाहा मन में नहीं घास खोदने गयो।
अकस्मात मुहर की थैली दैव वाकूं दियो ॥२०
जन मिले मन मिले गैल जन जुवती नारि।
दैवी चक्र सूं आय परे नाना सुख शुभ हारि ॥२१

इति दैवीचक्र ॥५॥

काल चक्र एक और सुनो याहि तन में देखो।
जन्म वाल्य पौगण्ड किशोर या विधि लेखौ रखौ ॥२२
यौवन वौव काल की चढ़ाई जैसी गगन में अर्क।
पिछिलि पांच में कालचक्र है करौ तुम तौ तर्क ॥२३
मोछनवार सफेदी आयो वाय विन बीन डारौ।
दूध दही घृत शक्कर खाय के या तन कूं सुधारौ ॥२४
नारि मोकूं नहिं निरखैं और वो बावा कहे।
किस विध हूँ तिया संग अब होय है नेहे ॥२५
चषमा लाय कुच मुख देखु वा दिन चलि गयो।
खाते पीते तन का चाम वलित गलित क्यों भयो ॥२६
हा हा किशोर हा हा यौवन घुटव्यौ कर तुम मन में।
काल चक्र सो उलट गयो वियोग होगा तन में ॥२७ इ. का० च.
जड़ चक्र एक या तन व्यापक सदा फिरे है भाई।
ऋतु ऋतु में शरीत की ओत जैसी देत दिखाई ॥२८
सत्व रज तम वलित चक्र है लघु गुरु वेग मोटाई।
विविध वासना होनी अहोनी मनको जो खोटाई ॥२६
थावर जंगम कारज सुख दुख पाप नेह पुण्य।
निंद्रा स्तुति भली शुभ वुरी या मेरी या अन्य ॥३०

राग द्वे आदि सब जुरिकें जड़ भयो ।
या जीव की हार रति देखकें जड़ चक्र तन छायो ॥३१
जड़ चक्र सो अनंग है अङ्ग अङ्ग में डोलैं ।
स्थान अभिमत रूप दिखावें मंगल अमंगल बोलैं ॥३२
पाङ हातकी चटक गति तैं चट चटाध्वनि सुनो ।
जो दिन तैं प्रकृति भग स्पर्शो सो दिनते है मानो ॥३३
कालजम नीच वाकौं कहिये थावर जंगम बीज ।
जौ लव वाको तन में देखौ कृष्ण तन नहिं नीज ॥
बेर बेर गौरहरि किशोरी निज कृपा करि आवें ।
जड़ चक्र कूं निरखि निरखि के उलटी धाम कूं धावें ॥३५
सुदर्शन आरा आगे पाछें काठ कतर चूर डारें ।
अब सुनो तुम भक्ति चक्र चित्त चेतन हारे ॥३६ इति जड़चक्र ॥७
भक्ति चक्र जड़ वल काटें अरु भ्रम गयो भाज ।
जिन काम कूं जीव सुख मान्यो तासूं भयो अब लाज ॥३७
अपनो कर्म कूं आप रोवे हा हा नाथ पुकारे ।
निपट दीन हो है जीव मन छोरचौ व्यवहारे ॥३८
आत्म तत्व हरि तत्व भक्ति चक्र क्रम दिखाया ।
जगत सुख तुच्छ दूर करके हरि सुख चक्र चखाया ॥३९
येसी नहिं वैसी करो या साधुन की गैल ।
काँटो नहिं या गैल विविध आगे है शैल ॥४०
या सुख है हरि पग में या विषय सुख दोउ ।
क्यों आये तुम भारतवर्ष पै मन विचारो सोउ ॥४१
आत्मा है सो अजर अमर सो क्यों तन कौं धरचो ।
करम फंद में वलित होय कैं माने आपकुं मरचो ॥४२
मौत जो सो सांच है कमलज आदि जेते ।
सब कूं खायकें रख्यौ है कीट पतंग केते ॥४३

श्री हरि पग अमर नगर है हरिजन गये तहां।
जुग मुख माधुरी अमृत रस पीये वाहि पग कूं हा हा ॥
थावर जंगम कीट पतंग सब तन में हरि राजै।
अति सूक्ष्म है नैन अगोचर हरिजन तन पै गाजैं ॥४५
भक्त भक्ति भागवत हरि लींग गुण नाम।
तेरौ हित हरिचिन्हा धरिकैं आप गये निज धाम ॥४६
जब ऊधौ कूं उपदेश दीये तोकूं सुध तब कीये।
गौरनाम की कैसी तेज या लीये तन तोय दीये ॥४७
नारायण नाम अजामिल तरयौ हरि कहिकैं गजराज।
रामनाम सूं वाल्मीकि तपोधन कृष्ण कियो गणिका काज ॥
कृष्ण इच्छा तैं कुछित तनया याहे तैं कृष्ण प्रिय सखा।
श्री सूत कृष्ण सखा गाये भागवत में है लेखा ॥४९
गुरु रूप धरि पुन चेताये बृषभान नृप की भैया।
विभानु सा जनक ते हारी विकीर्त्तिका कृष्ण की मैया ॥५०
पाप जनम सूं पाप कमाया कछु नहिं आयो मन में।
पीछे आयकै गौर हरिनाम धसि गयो तेरौ तन में ॥५१
पतित पावन अघहर पुनीत श्री कृष्ण चैतन्य नाम।
वा नाम सूं सुमेधा पाया कृष्ण तत्व रस धाम ॥५२
या विधि नाना भाँति भैया भक्ति चक्र की फेरा।
काम कल्मश काटवेकूं जिहां कियो है डेरा ॥५३ ई. भ. च.
विलाप चक्र एक और सुनो हरि वियोग सूं लगे।
जाहि सुन कृष्ण पग कमल कृष्ण मन सूं जगे ॥५४
अतिशय चिंता घोरतर दिखावे कहा गति है मेरी।
कहां जाउ कौन कूं पूछूं हा हा किशोर किशोरी ॥
वरण शंकर उद्भव तन पाया अति पापी अति अपराधी।
कर्महीन दारिद्र कुचिल घेर लियौ भौ व्याधी ॥५६

काम तरंग सूं तन का आयू निवड गयो मोये दीशे ।
क्रोध मद मान मत्सर सूं सदा हृदय कूं पीशै ॥५७

भजनहीन क्रियाहीन गुणहीन भक्ति जुक्ति शक्तिहीन ।
साध्य साधन सूं अतिशय विहीना कहा करूं हम दीन ॥५८

तुम आत्मा नैन जुग तारा हम अंध अति मंद ।
तुम जुग नाम हृदय धरिकैं तन आयो मति धंद ॥५९

व्यास कुंवर की वचन सुनकैं मन भयो उनमादी ।
कहा करेगो सो उनमाद हरि भयानक भौ व्याधी ॥६०

तन मन रसना चित्त जरे है चिंतानल की दाहा ।
तन का भाग्य निरखि निरख कैं अतिशय उठे है हा हा ॥६१

श्रीहरि रंगी संग करि ही नाहूँ पापी अपराधी ।
हा हा स्वरूप श्री रूप गदाधर हरि रस सिंधु आमोदी ॥६२

माधवेंद्र परमानंद ईश्वर वक्रेश्वर अभिराम ।
तालध्वज गरुडध्वज श्रीवास अद्वैत द्वैतघ्नी रसधाम ॥६३

नाम प्रताप सूं धाम पायो हूँ काम तन में गाजैं ।
जो जो भजन जीव करे नाथ सो उठ उठ भाजैं ॥६४

त्वचा रुधिर मांस भीतर तिमिर वलित मोय दीशें ।
निपट बिकार कुटिल गति जड़ कभी पग सूं कभी शीशैं ॥६५

कृष्ण पग कूं मन दोरें है वीच लियो उन मारि ।
मृतक तन सूं बांध रख्यौ है पत्थर सो धन नारि ॥६६

गाहा ते तुम गज छुटाये अजामिल यम पाश ।
काम से तुम गणिका छुटाये भौ भय ते निज दास ॥६७

अजगर ते नंद छुटाये गरल तै वच्छ गोपाला ।
दावानल ते ब्रजजन छुटाये ब्रह्म अनल भूपाला ॥६८

या विधि विलाप कोटि कोटि हरिजन हरिपग गावें ।
विलाप चक्र सूं वलित होयकैं हरिजन हरिपग धावैं ॥६९

इति विलापचक्रः ॥९॥

पिचाश चक्र एक और सुनो जस मान बड़ाई चाहा ।
हरि भक्तन कूं आय घेरे है भीतर करें अति दाहा ॥ ७०
कैसी करकैं लोक हमें मानें नारि मुख नहिं देखूं ।
सदा भजन में चित्त लगाऊँ माला कर पै रक्खूं ॥ ७१
कथा सुनकें गद गद कंठ नैन धारा जल जाहैं ।
अँसुआ मो छकें लाल नयन तैं इते उते जन मुख चाहैं ॥७२
जन जन मुख सूं आहा सुनकैं कंठ सरस होइ आवें ।
नाना शास्त्र जुक्ति मिलायकैं भागवत पंडित गावें ॥ ७३
जन मान भीतर प्रहलाद ऊधौ भाव तन में चाहै ।
भावत भावत वैसी होहै जन मन रंजन कूं धाहै ॥ ७४
कान सुनो है कमठ आकार गौरहरि भये आपी ।
जन रंजन कूं आप होहै देखो चित्त या पापी ॥ ७५
मुख तैं वाणी निकस गयो कारज भयो है सिद्ध ।
भजन सूं फल अपनौ मानें सब जगत में वृद्धि ॥७६
माया सो हरि वनि आवें स्वप्नहरि रूप देखे ।
बड़ो रसिक अपनो मन मानें जन जन ढिग सो भाखे ॥ ७७
प्राकृत अप्राकृत वाणी बनावे द्वैत बसे हे मन में ।
जगत बड़ाई मान और पूजा अवुध चाहे या तन में ॥७८
भीतर चाहा बाहिर त्याग धूल दिगम्बर रूप ।
हाथ जोरे ठाड़े रहैं बड़े बड़े नर नर भूप ॥ ७६
जो होगा जो होगया अब होहै जो आखें ।
भजन सिद्धि अब जन मन पोखें सोई सोई मुख भाखें ॥
अणिमा आदि हरि पग वंचक पिचाश चक्र सो लाई ।
हरि भजन आनंद रस सुधा या चांडाल वधु खाई ॥ ८०
पिशाच चक्र का घोरतम भीतर बाहर जोत सी दीखे ।
निशाचरी पूतना रूप धरे है सब इंद्री कूं पीशे ॥ ८१

पिचाश चक्र में चित्त चढ्यौ है कौन उतारे ताय ।
गौरनाम जो कृपा करे तौं जीव सुमेधा पाय ॥ ८२
जब तन देखौ तुच्छ करि मानौ अति पापी अपराधी ।
श्री हरि पग जोत जब दीशें मन कारज सब साधी ॥८३
आप फूलो हरि कूं फुलावों आप रो हरि कूं रोवावो ।
मत्तसिंह जैसो गाजें वैसी हरि कूं दिखावो ॥ ८४
अखिल भाव हरि पग धरो बैरी मित्र नैन जुग तारा ।
मात पिता सहोदर गुरु गति बन्धु हिय हारा ॥ ८५
सास्ता करता धाता विधाता गौर गदाधर प्राण ।
वैसा चिंतों या जग में मति निरखौ मुख आन ॥ ८६
चित सूं चिंतो गोर पग कमल रसना उनकी नाम ।
पिचाश चक्र ते उतर जावो तुम जोतमय राधिका धाम ॥८७

इति पिचाश चक्रः ॥ १० ॥

और एक चक्र है देखा हृदय में अति सूक्ष्म अति मोटी ।
पाप चक्र सो नाना तन धरें अतिशय दुर्गम खोटी ॥ ८८
हरि पग भजन स्मरण मनन तैं मन कूं हरि लै जाय ।
नाना चित्र चमत्कार रचें हरि कुं दीयो भुलाय ॥ ८६
काम क्रोध मद मान ते जो जो कर्म इन कीया ।
सो सो काम कूं स्मरण करावें सो सो रस मन पीया ॥ ६०
रसना नाम कर सूं माला मन चल्यो भग माहि ।
सुगम अगम देख तन चलें कहूँ चलें कहूँ नाहि ॥ ६१
दान करिकें वकत डोलें पाप चक्र की फेरा ।
परम ज्ञान कथनी कहै हजार कोश पै डेरा ॥ ६२
गोरकधंधा खेल जैसी कढा कढा सूं जोर ।
पाप चक्र वैसी जानौ मन रतन का चोर ॥ ६३ इति पा० चक्र

निवृत्ति चक्र एक और सुनो कपट पट तोरण हारे।
हरि कृपा सूं सुजन उर राजें नमताई मणि हारे॥ ९४
सत असत जेते एते सगरे हरि के रूप।
श्रवण नैन मन जो कछु दीखें सो रूप अद्भुत और अनूप ॥९५
हरि चिंता में बैठ्यौ है पुरव नारि रति रंग।
मूरत धरके सामी आयो निवृत्ति कियो उन भंग॥ ९६
हरि रूप जानके हरिजन भाई नमन होयके उनकूं।
नाना स्तुति हाथ जोरें विकार नहिं होय तिनकुं॥ ९७
क्रोध हरि रूप है हरिजन तत्व विचार करि देखि।
नमन होयके हाथ जोरौं भाज गयो तन शेखी॥ ९८
लोभ आयके झलक दीयो देख्यौ हरि की दासा।
हरि रूप जानके नमन भयो बाँध्यौ हरि पग आशा॥ ९९
मद आयो हरि रूप जानौं हरि भक्त हँसि दीयो।
आवो आवो कसलाकंन मद रूप छिपाय हरि लीयो॥१००
अभिमान आयो हरिजन आगे भ्रकुटि चढ्यौ हरिजन की।
आवो आवो हरि कहाँ गये थे कहा गति तुमरौ मन की॥१०१
दम्भ आयौ हरिजन आगे हरिजन तिरछी नैना।
प्यारी जैसी प्रीतम देखें वैसी चलावें सैना॥१०२
तम आयौ हरिजन देख्यों तिमिर पटल भय राशी।
चातक सी हरिजन निरखें घनश्याम अविनाशी॥ १०३
रज आयौ हरिजन देख्यौ धूर धूसर काया।
गौगण पाछें वृजपति कुंवर जैसी उनकूं भाया॥ १०४
सत्व आयो सत्व सत्ता वृषभानु कुंवरि राधा।
हरिजन मन सूं भाव लीयौ मिट्यौ सगरे बाधा॥ १०५
ऐसी त्रिताप आधि व्याधी भय शोक मान जस आशा।
हरिजन सब हरि रूप जानिकें शुद्ध हो है हरिपग दासा॥ १०६

स्थूल स्थावर जंगम्म नारि नर नाना रूप ।
इन मधि द्विभुज मुरली वदन जानें हरिजन भूप ॥ १०७
ज्ञान खडग भक्ति रस नमन हरिजन हाथ जब धरयौ ।
कहा करेगो हरि विमुखताई आप आप सूं मरयौ॥१०८॥इतिनि.च.
अब सुनो तुम प्रेम चक्र भाव आशक्त सूं मेला ।
प्रेम चक्र जब हरिजन पावे हरि सुं विविध रस खेला ॥१०९
जुगलबिहारी जुग जुग चरण कांति और नख जोती ।
हरिजन हीये चमकत डोलें बिजुरी पाति की भाँति ॥ ११०
जोतिमय हृदय आनन्द उमगै परव सूं समुद्र जैसी ।
सिद्धि ज्ञानी ज्ञान छोड़कैं ब्रह्म जोत सूं वैसी ॥ १११
गदगद कंठ नैन जल धार कृष्ण कृष्ण रसना बोलें ।
नाना भाव सूं बलित होयकें मद मत्त सी डोलें ॥ ११२
अंगन सौरभ घ्राण पुट भरयौ मत्त भृङ्ग सी दौड़ैं ।
गोपी भाव सूं मगन होयके ढूढ़त डोलें शौरे ॥ ११३
लता द्रुम पृथि आकाश दिशा सब पूछत डोलें हरिकूं ।
भूल गयो तन धन भोजन भूल गयो घर पर कूं ॥११४
मधुर मुरली कान परयौ है कोटि तुला कोटि बाजें ।
कंकण किंकिनी बलया कर ताड़न नाना जन्त्र स्वर गाजें ॥११५
भाज चल्यौ है वीणास्वर सुनिकैं ललिता कंठ कल वाणी ।
राधा विशाखा तुंगा भद्रा स्वर घन उन सूं सानी ॥ ११६
ताथेई ताथेई धिक धिक ताता ताल मृदङ्ग मुख बोलें ।
उमड़ रही है नैन जलधारा वाम कर नील निचोले ॥ ११७
कमल आकार कर पाँच चंद्र दल पै बिजुरी बेल भुज द्वन्द ।
कम्बु कमल आकार दिखाऊँ कर दल दल जुरी कर बंध ॥ ११८
श्याम नैन अभिराम दोउ सफरी चटक गति देखो ।
चरण ठमक सूं मदन आकुल थमक रहि रति आँखो ॥११९

वरखत फूल देव मुनि हरषत जै जै गगन विराजैं ।
देव वधुगण आनन डह डह लाल नैन जल छाजैं ॥१२०
खंजन तितिर गमन पग चंचल शिखि गति गामिनी राधा ।
वदन सुधामय कोटि सुधाकर अधर मुधा स्मित भव वाधा ॥
वेणी भुजंगिनी नटन अति पंडित दामिनी गति अति भंग ।
जुग पग जोति धरनी अरुण अति धरणी धरणी धर चितरंग ॥
करतल ताल तरल वलयाकुल विधुमुखि गोपीकपाली ।
कंज अधर पर कंज कर दल मुररी पर लोलत रसिक वनमाली ॥
करे कर जोरत राधारति लम्पट मुख मुख चुम्वन रंग ।
कंप थर हरि गोपीकुल आकुल झलकत मदन तन अंग ॥१२४
ढलकत नैन गोपीकुच गत काश्मीर विगलित होवे ।
आलि आलि तन आलिगण लंवत अलिकुल धैरज खोवें ॥
हल्लीस नर्त्तन रतिपति मर्दन व्रजवधु कर अति जोति ।
कुलाल चकरसी कोटि तन घूमत झलक कुंडल रद मोती ॥
तन तन जोति कोटि वरह्म सुख भरम अमर जमवीर ।
वृन्दा कानन तिमिरकुल भाजत निवसत धीर समीर ॥
मणि कर्णिका मगरमुखी वंसीका वंसी मुख जल मांहिं ।
सिंचत परस्पर देव गदाधर मुख मुख चुबंत चाहि ॥
उडुगण राज थकित गगन पर किरण रजनी उजियारी ।
व्यास तनय चित भासत निति निति सुत मुख हूँ वलिहारी ॥
परासर सुत पद हृदिगत होवत शचीसुत पद जुग आशा ।
रूप सनातन हृदि मधि धारय हरिरस पीयो हरि दासा ॥१२०
सुमेधा मुख विधु गलित रससिंधु कृष्ण हृदि रंजक कारी ।
पातकी पावन देव जनार्दन शचीस्तन जुगल रस आनन धारी ॥

इति प्रेमचक्रः १३॥

इति श्री गौरनाम चम्पू चतुर्दशांकः ॥१४

पंचदशांकः

पद–आजु बधाई नंद महर घर घर घर आनंद वहिन्या।
फुलि फुलि डोलें गोप गोपीकुल फूल तरु गिरि महिन्या ॥
चमकत नैन कान सूं झमकत ठमक दुंदुवी भेरी।
उमडत हिय पै कोटि अमर सुख झलकत प्रेम रवि वेरी ॥२
जुथ जुथ सब वृज वधु निकसी तड़ित लता वलिपांती।
नैन ढर ढर राग झरत अति मुकलित कुच युग छाती ॥३
वेणी पुहुपकुल विगलित होवत जुग पग नूपुर वाजैं।
अंगण महक महावन पूरत चहुँ दिशि गोपीगण राजैं ॥४
कोकिल कलरव कंठ ललित अति गति गज गामिनी गाजैं।
अब गोप नृपेंद्र पुर पर वेशरी कृष्ण के हिय मल भाजैं ॥५
पद–जनम लियो है सुरपति भूपति गोपति गोकुलचंद।
गोकुल मह मह आंगन कानन दिवि भुवि अंगन गंध ॥६
केशर कुमकुम मृगमद चंदन कमल महक तन माहि।
घ्राण विवर भर पीवत नारि नर नीविडसोती घर मांहि ॥७
कोटि जलदघन कोटि शरद शशि कोटि जीवन मुख कांती।
गोल कपोल पै कुंतल कुटिल फुल्ल कमल मुख भांति ॥
कांचन रेख भ्रू धनु मनोहर तील पुहप जिनि नासा।
भाल विशाल आधि उडुगणपति श्रवण संगल दिगवासा ॥
ब्रह्म परात्पर मनुज रूप धरि धरणीधर रसन विलासी।
जनम कंसरिपु देवकीनंदन जुग तन एक रस रासी ॥
तुंग उपदेश घनतडित सावक करि कर भुज जुग गोल।
करकमल दलज चंद दश चलत पवन शीत घ्राण सुकपोल ॥
विकसित कमल चरण जुग मुखधर चुंवत प्रलय बिहारी।
वसुदेव रमणी नैन जुग मुकुलित फुल्लित गोपवधु वाल निहारी ॥
नंद महोत्सव उत्सव वितरत दिवि भुवि विवरक वासी।
हंसध्वज मकरध्वज वृषध्वज उपगत भुविपति उत्सव राशी ॥

दिव्य तनु दीप्त दिव्य भुवि खेचर दिव्य दिव्य दुंदवीसान।
दिव्य कंठश्वर त्रिनैनी मादक श्रुति रमणी श्रुति पान॥
वल्लव जूथ जूथ अंश भार धरि पय दधि मथनी मधु आदि।
सींचत परस्पर कर कर जोरत नाचत अति उनमादि॥
वेणु शृंग करतल शवद अद पूरत मुरज शत शंख।
ललित चितांकित रतनमणि मंडित गोगण वछ प्रति अंक॥
ऋषीगण देवगण सनक चतुरानन त्रिनैन गजमुख आदि।
वल्लव वेशभार अंश पर नाचत गावत अति उनमादि॥
वृषभानु कर वृजपति कलित उपनंद भानु विभानु।
छिरकत गंध चंदन मधु पय दधि नाचत गोप सुभानु॥
रसरण हियरण आनंद सरासन गोप नटन बहु भांति।
नाचत कृष्ण मन कदंब पुहुपतन अति मोद फूलत छाति॥२
पद–नंद वधाई अमर मन मादक जन जन देवत दाने।
द्विजकुल रंककुल गुणिकुल गोपकुल नारिकुल आने॥
वसन भूषन कंचन रतन दैवत गोभूमि कोटि।
आनंद गर गर तनुरुह नाचत नैन कमल जुग मोटि॥
सात तिला नग कोटि रतन जुत देवत सुत हित लीये।
कराल कंस भुप भूमि कर दान नंद चलत जब जीये॥
भोजपति हरखब सुदेव प्रमिलन निशाचरि हुतभुकवारी।
अगर के सौरभ नासा पुट पीवत बोलत गोप गोपनारी॥
निशाचरी कमला कमनी रूपवती आई ही गोकुल मांहि।
वृजकुल जीवन चेतन मुखलई अबहु चेतन नाहिं॥
मधुपुर आनंद नंद उमड़त गोकुल जन हत प्राण।
जीवन जीवन धारिहुँ तन तत्त नारायण पग ध्यान॥
चुंवत सुत मुख आनंद लोचन वाजत विविध बधाई।
श्रीहरि चरण शरणागत कृष्णदास रस गाई॥३

दोहा-प्रकट प्राणपति लीला रस पुहपदाम चितघृत पोहि।
किंचित किंचित शोरभ घ्राण कूं सुकमुख आसब जोई ॥१
जशोमति नंद आनंद निति निति सुत मुख वनज विलोकी।
हसत हँसावत मुगध बाल हरि श्री मनुज लीला सो अलौकी ॥
शकट विभंजन बात तन कंदन त्रिभुवन बदन दिखाया।
मात तात उरदेश फुलावत निति निति वर्द्धत काया ॥३
पुन पुन किलकत चरण चलावत मुहमुहरोवत बाल मुरारी।
उरोज पय पीवत मात उर सोहत मात मुख रहत निहारी ॥४
क मुख क पग क नैन उर शीश क कर कटि उरू बाहू।
पूछत गोपीकुल कर सूं दिखावत भाजत चित्त शशि राहू ॥५
कुटिल कुंतल मगर आकार जुग कुंडल व्योल कपोल।
केशर मंडल भाल पर सोहत भूपण रतन अमोल ॥६
रिंगत उरुकर आंगण घर पै चमकत परमुख देखि।
रवरवि मात तात उर लंबत अभय भय मुख पेखि ॥७
स्तंभ आलंब वच्छ पुच्छ कर कलित अंगुलि मात।
धरत पग जुग धरनी भूषण सिखावत गति पग पात ॥८
वृषभ गर्जने चमकत बाल हरि रुदत नैन जुग कंप।
निरखि आनन चुंवत जसोमति रभस सागर झंप ॥६
अंबुद रुचिर मादक मुख शशि पक्व विंब फल अधर सुरंग।
किंचित किंचित दशन विकसित कुंद कुसुमकुल उमगत अंग ॥
उरोज रस पीवत पगजुग चालत चुंवत वृज अधिरानी।
डह डह लोचन अरुण अरुणालय पुलकित तन उर पाणी ॥११
पादुक अशि शूल कमंधनुहुल कलबत देब मुरारी।
परातपर ब्रह्म परब्रह्म सनातन पेखत ऋषि असुरारी ॥१२
नंदक उर पर धवल श्यामर रोहिणी तनय जग जीव।
उपगत गर्ग महामनि रहसि नाम धरत जगशीव ॥१३

आंगण शोभन धवल श्यामर इते उते चरण जुग चारि।
नाचत गावत कूदत घूमत नूपुर रसन झनकारी ॥ १४
अंजलि धान्य धन परि पूरित मालिनी रंकिनी तोसे।
नगर डगर घर घर लोकत वृजजन चित मन मोसे ॥ १५
माखन दधि घृत दूध मधु पीवत तोरत कपट कपाट।
उमगत रसमय नव नव कौतुक कौतुकी गोपी की ठाट ॥ १६
देत ओलाहन नगर गोपीगण फूलत जशोमति रानी।
सुत मुख चुम्वत चुचावत स्तन जुग पीवत जगजग वाणी ॥१७
चुगल सहचर चुगलि लगावत जब गति धावति रानी।
चतुर्दश भुवन वदने दिखावत लकुट डारी रानी पाणी ॥ १८
अंक पर लेई देई मुख चुम्वन भई है पुलकावलि काया।
नंद महर पै चंद उजागर दिखावत विविध रस माया ॥ १९
कालिंदी रोधसी गोप बालक जुत रामकृष्ण जुग भैया।
पुकारत राजमहिषी जसोमति पुकारी रोहिणी मैय्या ॥ २०
रे रे रे रे राम कमल विलोचन कृष्ण कृष्ण गोकुल प्राण।
एहि एहि सुत जाम दिवस अति सखाजुत श्रुनत कान ॥ २१
रामकृष्ण कर कलित नंदवधु आवलि मंदिर मांहि।
विविध वधाई महोत्सव उत्सव करत वृजदेवी ताहि ॥ २२
स्तन रस पीवत देव जनार्दन उमरयौ पय उत देखि।
रगमगि देवी यशोमति धावई सुत कूं भूमि पर राखि ॥२३
बाल हरितन मातक उर पर पय भाजन तोरल सौरी।
मरकट मुख पै मोदक देवत निरखि देवी जब दौरी ॥ २४
जोगीगण मुनिगण ईश अनंत अज जो पग ध्यान पथ ढूडें।
सो बाल हरि कूं पकर जसोमति केवला रति रस बूढ़ें ॥२५
महत आकाश कूं वांधन लगी देवी नून अंगुरी दोय।
निरख मात श्रम वंधन आवत शरणागत दुःख खोय ॥ २६

उलूखल आरि जरसूं जमलाज्जुंन उपरचौ शब्द दिशि व्यापौ ।
चट चट ध्वनि सूं महावन पूरत गोप गोपी कुल कांप्यौ ॥ २७
अद्भुत पुरुष जुग मणिमय भूषण नमत दामोदर आगैं ।
धनद नंदन नारद वर सुत उपगत उत्तर भागैं ।।२८
बल्लभ जुथ जुथ घूमत चमकृत जुग द्रुम पतन विलोकी ।
बाल मुख वचन पीवत जन जन दामोदर वदन अलोकी ।। २९
उदर दाम नंद कर खोलत चुम्बत उर पर धारी ।
फुल्लित लोचन डह डह वदन विधु फूल्ली वृज नृप नारी ॥३०
महा उतपात निरखि उपनंद बोलत वृजजन आगैं ।
विविध असुभ गण महवान होयत सुत कूं सब कोइ लागैं ॥ ३१
वृजजन जीवन वृजपति नंदन नैन बल्लभ अभिराम ।
श्याम सूरत बिना असु तन छोरब अब चलो औरहि गाम ॥३२
वन वृंदावन तरु गिरि सोहन तृण लतिका जल फूल ।
साधु साधु करि कहत गोपगण साजत सकटक कूल ।।३३
बाजत श्रृङ्ग भेरि तुरि मुरज ढामक वेणु विशाल ।
हुँ हुँ हुँ हुँ गोपगण गरजन रामकृष्ण अगोआल ।। ३४
श्याम धवल कू परित गोपीगण गावत चरित उदार ।
रोहिणी जसामति उर पर बाल हरि निरखति वल्लभ नारि ॥ ३५
नंदघाट जहाँ नगर बसायो नंदगाव अभिराम ।
विविध हमगण गोकुल खिरिकि सूरज सुता तीर गोकुल नाम ॥
विजय वृंदावन जय जय होयत वृंदारक वृंदाबन वृंदा ।
रसिक वृंदगण नरतन धारि जो सोचित आनंद चंदा ॥ ३७
कुसुमित वनराजि राजिव लोचन विहरत वत्सक संग ।
राम श्याम दोउ रमण परायण विहरत बालक रंग ॥३८
भोज पति सैन सूं असुर महाबल बच्छरूप धरि आयो ।
पकर बाल हरि असुर काय कूं कपित्थ उपर चलायो ।। ३९

जै जै दुंदभि गगन गाजत पुहपन बरषे देवा ।
नाचत अपछरि देवी उनमति हर अज करत पग सेवा ॥ ४०
सम वय बाल लाल चरित सूं फूलत नैन सरोज ।
मुख वाद्य बाँसुरी शृङ्ग शबद शत उमरत तन सूं मनोज ॥४१
प्रथम वृंदावन आपद नाशत बछवन बछक रूप ।
फूलत बालक कर उर धारत निरखत मुख सुख भूप ॥४२
बिहरत वन बन अलिकुल गुंजत कुसुमित तरुदल पाली ।
विविध कौतुक सखागण जोरत रमत बने बनमाली ॥ ४३
धवल नग सम मत्त असुर वर वक तनु धरि सो आया ।
शफ जुग पसारि निरखि बाल कूं निगल गयो हरि काया ॥४४
तपत ईश सम जरावत वकगर बरजत वक महावीर ।
भाजत पुन पुन आवत पुन पुन कृष्णतन अतिशय धीर ॥४५
सफ जुग जोरि जोरसूं उर पर मारत निशाचर पापी ।
सम्हरि जनार्दन जन मन रंजन पकरत शफ जुग आपी ॥ ४६
मूंजक पल्लव वाल जैसी फारत बकतन दो टूक कीन्हो ।
धरणी की विभूति धरणी पै राजत आप चेतन लीन्हो ॥४७
जै जै नमो नमो गगन मंडल पै नाचत देव वधु कोटि ।
बरषत पुहप अमर पुर नागरि माल बरषत अति मोटी ॥ ४८
मुख बाँसुरी वेणु शृङ्ग शबद शत बालक नाचत रंगे ।
अभय परात्पर निर्विशेष विशेषतन हरिजन तोषक संगे ॥४९
बक अजा मेंडुक रूप दिखावत चोर गृही उनिहार ।
राज राजेश्वर कौतुक रचत होवत बने बन जार ॥ ५०
राम दामोदर निज रस विनरत मछ कमट अवतारा ।
गरुड़ गोविंद दशमुख नाशक शेष शयान गलहारा ॥५१
यदुपुर रचत कोशि कुशस्थलि बद्रीनाथ जोग ध्यानी ।
लीलारस मंडल सिंधु रस पीवत सखागण चित रस सानी ॥५२

पौगंड वय पै इह विधि क्रीड़त बाल चरित्र औरु गाऊं।
जो हरि चरित्र सूं अंधकार हरैं प्याण प्यारे पग पाऊं ॥ ५३
बिना बलराम श्याम घन मोहन कोटन बालक संग।
वन वृंदावन पै धावत चकोरसि कालिंदी रोधसि रंग ॥५४
वत्स बाल श्रम नील नीर पीवन चेतन रहित तन भोर।
मनुज लीलारत जगजन जीवन निरखि नैन बहे नोर ॥ ५५
कारण जानू जन नहिं पावत निकसी वृंदावन देवी।
आदि अंत सब कहि दयी काहू कूं हरि पग कानन सेंवी ॥५६
तब हरि नैन अमृत रस बरषत उठत वाल बच्छ पाली।
नीय तरु शिखर तमकी उठत पीत वसन बनमाली ॥५७
रतन पेटि पै बाँसुरी धरिकै बाहु बजावत कान।
दमकि उठत गगन मंडल पै ज्यौं शची पति हाथ सूं बान ॥५८
यमुना ह्रद में पतन होवत शत धनु उछली ह्रदय पाणी।
कालीय महल पै कोलाहल होवत कांपि कालीय राणी ॥५९
निकस्यों महाबल खगपति रिपुदल निरख्यौं सुन्दर श्याम।
घेर लीयो सब फणधर फौज सूं चमक मणिगण गामा ॥ ६०
साह्मो परचौ है भुजगराट महाशत शत फण सो उठाया।
दीरघ स्वांस सूं जगत जीवन कूं अंगन काटन धाया ॥६१
इते उते घूमत श्याम नवघन नील विष जल माहि।
भाजत फौज चरण चमकसूं सुरत मोहन पग ताहि ॥६२
बिहरत जल पै अभय परात्पर कद्रु कुंवर पुन आया।
जग मग मणिगण फणगण उपरि निरखि बाल हरि धाया ॥ ६३
अपनो मन सूं भुजग बंधन आप लिए रस रासी।
गोकुल आकुल कोलाहल होवत आये हैं गोकुलवासी ॥ ६४
गोप गोपी चित निरखि जनार्दन पुष्ट किये निज काया।
भज गयो नाग तन हरि स्मरण सूं जैसी भजी जरमाया ॥ ६५

पुन आयो कुटिल कुंडल आकार सूं उछल्यौ नंद की वाला।
कालीय शीश पै पग जुग तारत एडी सूं मणिक मनिमाला॥
गरलव वन सूं दर्शादिशि पुरत अज अद काजर की हो।
तब हरि किंकणी सूं वासुरी लायकैं अधर कमल पै दीहो॥
नाचत देव वधु पुहप वरषावत जै जै देव ऋषि वाणी।
गोपी गोपीगण तन तन मिलत उरज श्रवत व्रजरानी॥६८
दावानल पान किये जन रखलीये मोद भये वृजवासी।
रजनी प्रभात गोप घर आये हैं गोपीदास सब दासी॥६९
परम गोपन और एक वर्ण हूँ प्राणेश विभव प्रचंड।
जो रस श्रवण तैं कपट कुल भाजत नरतन गाजैं अखण्ड॥७०
श्री राम बिना श्याम बन आये वत्सन बालक संग।
वकी वक अनुज अघासुर महावल अजगर नग रूप अंग॥७१
मुख पशारत भ्रम सूं बालक जुथ मुख करतालि बजाया।
हरिमुख निरखिकैं वत्सन फटकार आप धस्यो उन काया॥
अघासुर मुख में चित्त चेतन सो आप धस्यो बनमाली।
त्रिजगत जोत रहित भयो हा हा करत देव पाली॥
फट गई अघ काया हरिजन निकसे बाल वच्छ आप।
अघासुर असुर जोत गगन परि राजत हरिपग सूं भयौ जाप॥७४
हरि विहरत कालिन्दी तीरहिं मंडल भोजन रंग।
वद्ध ढूडण हरि आप चल्यौ कमलज कीयो॥७५
उते वछन इते बालक कमंडल पेट भर लीयो।
जनम सुधारयो व्रह्म लोक पै सावित्री॥७६
जिहा हरि आप रूप सब धर लीये वच्छ बालक अनुरूप।
घर घर परमेश्वर तन राजत प्रकाशत रूप अनूप॥७७
गोपन गोगण प्रेम निरखिकैं राम भये अति चकिता।
मनमोहन सब कहँ हिये है खुल गई उनकी अंखियां॥७८

वरष वितायकै सनक जनक पुन आयो है चौमुख गाम ।
सोई वच्छ काल सूं विविध विनोद देख्यो नव घनश्याम ॥७६
इते निरिखैं उते निरिखैं कौन सत्य है कौन माया ।
इत उत दोउ नित्य है अपनो मान्यो झूठी काया ॥८०
अभिमान भज्यो भक्ति तब आई अद्‌भुत अज तहां देख्यौ ।
जेते वच्छ बालक सबहिं चतुर्भुज हंसपति पसारत आखौं ॥८१
श्याम नव घन मुकुट कुंडल वनमाला कौस्तुभ कंठ ।
कोटि शशि भाष्कर कोटि मणि विजुरी अंगण आभसूं कंठ ॥८२
मणिमय नूपुर खन खन बाजत शंख चक्र गदाम्बुजधारी ।
षटविधि विभूति हाथ जोरत है श्री भू लीला उन सारी ॥८३
अनंत वैकुंठ निज निज बिभूति सूं पत्र पत्र अज देख्यौ ।
अनंत माधव तुंग उरपरि राजत राधातन रेखौ ॥८४
अलिकुल गुंजत वनमाला लटकत मणि मंजीर अघ्रि सरोजैं ।
अचिजुग लम्बित नैन जुग छोर मणिमय माल उरोजैं ॥८५
मणिमय केपूर हाटक कंकण करतल अंगरि पांत ।
गंड जुग पै कूंडल जोत अति दशन हसन सूं फूलत छाति ॥८६
अधर लाल सूं लाल चतुरानन लालनैन चित लाल ।
लाल रस मन सों नंद सुत ध्येयत तब देख्यों जसोमति बाल ॥८७
नटवर शेरवर पिच्छ मुकट धर श्रंग विराजैं ।
जठर पेटि पै मनोहर मुररी वगल पै चित्र छवि गाजैं ॥८८
वाम करपै ओदन भातदधि अंगन गंध बन छायो ।
कोटि कोटि भ्रम भ्रमरी तन गुंजत हरिलीला उन गायो ॥८९
रे रे रे रे श्रीदाम दाम वसुदाम तोककृष्ण अश्रु भाई ।
हरित नैन जुग निरखैं हंसपति वहुविधि विलाप हरिगाई ॥९०
चमक्यौ चतुरानान हंस की पीठ सूं आय परयौ व्रजभूमे ।
कंप थरथर हाटक पुतली चित्त इन्द्रिमन घूमे ॥९१

आठ नैंन जल डारत पदजुग मणि मंजीर नखगण धोयो।
चरण पसार कें पकर लीयो पदजुग आप धरनी पैं सोयो॥
नाना विधि जो कछु नैंन निरख्यो बहुविधि अस्तुति उन कीन्हो।
सदय होयकें जसोमति नंदन चरण सरोज सिर दीन्हो॥६३
वैसेही मंडली गोप बालक जुथ कान कान करि बोलें।
तुम बिन एक ग्रास मुख नहिं गयो तुम बिन चित उतरोले॥६४
बाजत शृंग वेणु वर बांसुरी नंद नंदन घर आये।
आजु मारो महा अजगर सर्पक गोप बालक सब गाये॥६५
भांडीर बन पै प्रलंब महाबल बलदेव मृढ़ सूं मारयो।
मुंजाटवि सूं अगनि लग्यो है गोगण बालक तारयो॥६६
इंद्र महोत्सव सॉज निरखि कें उलट दियौ ब्रजराज कूं।
विविध उत्सव मंगल महोत्सव पूजत सबै गिरिराज कूं॥६७
दहिनो किये हैं हरिजन वर कूं रूप चतुर्भुज देख्यौ।
पजर मरयो है शचीपति मन सूं उड़ गयो है उन सेख्यो॥६८
तब शक्र वक्र भयो है चतुर जलधर बुलाया।
मरुतगण कूं आज्ञा दियो है आप हाथी पैं आया॥६९
महा अँधियारी घेर लियो वृजपुर विजुरी पतन भय दीन्हो।
मूसलधारा जलधारा परत है ऊंची नीची एक नहिं चीन्हौं॥१००
तब हरि हँसिकैं गिरिवर उठाये ब्रजजन गिरितर वासी।
बाम करपै गिरिवर राजत सात दिवस सुनो हासी॥१०१
वृषभानु कुंवरी लाज सूं छुप गई भटक्यौ हरिचित नैंना।
थर थर गिरिवर कांपत हाथ पैं थर थर गोप गोपी बैना॥१०२
कारण जानि गोप गोपी सबै राधा कूं हरि ढिग राख्यो।
तब हरि हाथ थिर रह्यो है वदन सुधा जब चाख्यो॥१०३
कोटिन तड़ित वजर पड़त है गोवर्द्धन नगशीश माहिं।
अचल गोवर्द्धन पुहप नहिं टूटत टूटत शत्रु मन ताहि॥१०४

लाज पायो है अदिति नंदन दशशत नैंन मूदि लीयो ।
वादर वात कूं आप बुलायवैं निज निज घर कर दीयो ॥१०५
कश्यप रमणी कूं शक्र लायो है कोटि अमर गण संग ।
हरिचरण जुग ठण ठण मुकुट मणि अमरक उमगत रंग ॥१०६
अमरपुर गंग नीर करि डारत केशव शीश पर शोभा ।
उरज धारा छूटत गो जननीक मुकुलित आनंद गोभा ॥१०७
गोविन्द नाम प्रगट सुरभी मुख वनचर आनंद कारी ।
गावत किन्नर ऋषिगण जै जै नाचत देवगण नारी ॥१०८
तालवन पै ताल फल खाये खर रूप असुर बल मार्यो ।
माथुर रमनी कूं दरशन दीये हैं माथुर द्विज रह्यौ न्यारयौ ॥१०९
देवी व्रत परायण अंबर पुंज हर घनश्याम नीप द्रुम माहिं ।
नैन छोर की झलकन निरखि कैं अबलौं भीजत ताहिं ॥११०
बंशीवट पै बंशी बजी है काम बीज अभिराम ।
ललिता विशाखा श्यामा चन्द्रावलि राधा जुथेश्वरी नाम ॥१११
बांसुरी सुर में चरण धरी है मृगनैनीगण लोल ।
प्राण प्रीतम सूं आप मिले हैं पुलकित उरज कपोल ॥११२
बहुविधि चातुरी हास भास सुख मदन मादन लीला ।
प्रकट किये हैं गोपति नंदन वृषभान कुंवरी सुशीला ॥११३
राम श्याम जुग रास विलास रस शंखचूड़मणि लीहो ।
श्याम राम कूं राम सुबल कर राधा पग स्यमंतक दीन्हौं ॥११४
पांच चतुरानन दशशत आनन अबलों पार नहिं पावें ।
नरक कीट ढीठ कृष्णमन गौरनाम रस गावें ॥११५

इति श्री गौरनामचम्पू पंचदशांकः ॥१५

षष्टदशांक

गोकुल मंगल कान कमलापति केशव करुण विहारी ।
मंगल मंगल हरिजन चेतन मधुरिपु मधुर मुरारी ॥१

कालिंदी कुल नट कदंब विभूषण कुंजर गामिनी मोद ।
कमल अधर धर कांचन अंबर वलित बल्लवी कुल गोद ॥२

कालविमर्दक कमलानायक किंकर अंकुर कारी ।
कृष्ण कृष्णतन कृष्णा मनमोहन कंसरिपु केकीदल धारी ॥३

कमल नैंन किशोर किशोरी धव केशर कुंकुम अंगी ।
कांचन लतारत कमनी वरवल्लभ किशोरी नैन रस रंगी ॥४

केदार कुंवरिवर केशि असुर रिपु कालजवन कुल नासा ।
काशीश्वर कामद कालीय मर्दन कुंद दशन पितवासा ॥५

खरदूशन हर खंजन नैनी वर खगपति अंश बिहारी ।
खलकुल खडन खार चित मोचन खंजन गमन निहारी ॥६

कात्यायनी व्रती चीर चोरक कदंब शीखर रामी ।
कलिमल दूषक कंचन तन धर कमंडल शरीत तीर गामी ॥७

गोविंद गदाधर गजगति दायक गोकुल रमन गति दाता ।
गोपति गोपपति गोपीरमन पति गोपी जठर निधि जाता ॥८

गिरिधर गोवर्धन गोवत्सपालक गौरव गंगकबारी ।
गोपाल गुप्त तन गोपी रंगिनी मन गौरतन गौरवकारी ॥९

गोरज मंडन गोकुल चंदन गति गति गोकुलपाल ।
गोवर्द्धन कंदर काम कलाकुल गलित कुच कुंकुम गोपीरसाल ॥

घन बादर तन प्राण काम तुन घनश्याम घरघर गामी ।
घोरतम हर घर घर रविवर घर घर पोषक नामी ॥११

चतुर चारु भुज चंदन चर्चित चतुरानन नैन विलासी ।
चराचर चेतन चित्त विमोहन चिन्ताकर चिंतामनि रासी ॥१२

चौर चतुरभुज चकोर पान रस चातकी बादर पांति ।
चरण चालक चतुर चातुरी चेतन चित्त रस भाँति ॥१३

छंद महोदधि चंद उजागर छलतन छंद विलासी ।
छल बल भेदक छंद प्रवर्त्तक छविल छबीली निवासी ॥१४

जन मन रंजक जग जन जीवन जगदीश जनार्दन जोती ।
जलज नैन जलजात नयनी वल जनक कुवरि उर मोती ॥१५
जग जन जोत जग आलय जगन्नाथ जगत आरामी ।
जग मोचन जग लोचन जगमोहन जग जग कामी ॥१६
तरुण तरुणाकर तरुणी मन मादक तप्त तन ताप विनाशी
तरुवर भूषण तरुणी मनोरम तरुणी शित तरूणी विलासी ॥१७
दधि चोर दामोदर दयामय लोचन दर्पहा दयानिधि दाता ।
दांभिक दंभहर दंपति रूपधर दास वत्सल द्रव त्राता ।१८
द्रारिद्र मोचन दधिमुख वामन दर धर दावानल हारी ।
दानव मानहर दानीरूप दमक दयित दयिता नन वारी ॥१९
दितिकुल मान मल दैत्यरिपु दर्प बलदेव वर देवकी जात ।
देविकुल मंडन देव देवपति दमुघोप सुत हत हात ॥२०
दश शत लोचन मद भर भंजन दशशत आनन भोग ।
दशमुख सुखहर दशदिशि मधुकर द्विजवर द्विजगण जोग ॥२१
धवल श्यामर धर्मवधू सुत धरनीधर धर्म विलासी ।
धनुर्धर धर्मधर धर्मकांड पर धीधर धेनुक नाशी ॥२२
धीपति धीरपति धीरगण मोहन धवली पालक धाम ।
धवल दशन पर धरनी विधारक धरनी मादक काम ॥२३
नरोत्तम नारायण नरबर नटबर नाग नागरी प्राण ।
नरसिंह नरगति नरकनाशक नंदनंदन नटखान ॥२४
नंदीश्वर ईश्वर नंदगामरत नैन आनंद नग धारी ।
नबल गोबिंद नगगह्वरभास्कर नृपति नृगगति कारी ॥२५
नित्य नित्यानंद नव नव आनंद नैन नीर रस रासी ।
नव खंड मंडन नृत्य परायण निभृतनबद्वीप वासी ॥२६
प्राण प्राणेश्वर पर पद संपद प्राणपति प्राणबिकाशी ।
प्राण बिपूत पूतना प्राणहर प्रणय प्रेम बिलासी ॥२७

परात्पर परमेश्वर परावन पातकी पाप विनासी ।
पारिजात प्रसुन पराग परिततनु पर पद प्रान विलासी ॥ २८
पुण्य पुरुषोत्तम पुरपति पुरजन पालक पांचालि अंबरदाता ।
प्रिय प्रिय प्रियव्रत प्रियाव्रति प्रियाव्रत प्रिया हृदि रस माता ॥ २६
वल्लभ बालक बलदेव बलानुज बकारी वल्लभ वीर ।
वनमाली वन शशिवदन महोज्ज्वल वल्लभी नैनक नीर ॥
वर वरदेश्वर वृषभानुसुता पर विभानुतनया गति दाता ।
वृंदावन रवन वृंदा नैन विधु सिंधु वृहद्वन जाता ॥३१
वकुल मालधर बलाहक चालक वन वन संचलकारी ।
विश्व विश्वम्भर विशद मानस विहारी वृजजन धारी ॥ ३२
भक्ति भगवंत भक्ति भक्त संपद भक्तजन हृदयक वासी ।
भुवन मोहन भव भुत मोचन भूतनाथ भुवि सुत नाशी ॥ ३३
भगत भवगति भारत महिपति भारहर भक्त तन धारी ।
भय कुल मोचन भक्त तन लोचन भक्त भक्ति रस कारी ॥३४
मदन मोहन मादकी मादक मानिनी मानद मान ।
मुकुंद मुक्तगती मुरारी मधुसूदन मुनिगन मनो भगवान ॥३५
माधव जादव यदुकुल संभव जमुना रोधसी वासी ।
यशोमति नंदन यशोदा प्राण धन यशोदा जीवन जीवनरासी ॥३६
योग योगेश्वर योगीश्वर योगधर योगीगण संपदसार ।
यमुना तट नट योगीगण नंदन जुगल बिहारी यमद्वार ॥३७
रमन रमनीवर रमाधव रसपुर रसिक रतन रसराज ।
राज राजेश्वर राधा मनमोहन राधाधव रमणी समाज ॥ ३८
रजक शिर हर रावन दावन रघुपति राघव राम ।
रजनी बिहारि रास रस मंडन रमणी रमण रसधाम ॥ ३६
रोहिणी नंदन रेवनि रमण रैवत धैवत बासी ।
रतन मुकुट धर रंग विलोचन रंग कलश रस रासी ॥४०

रसाल रसालस गौरवनाशक राधारमन रसचंद ।
रणछोड़ रणाकर रणजीत रणपर रणजोर रण रस छंद ॥ ४१
रिपुकुल मोचन रुकिमिनी मोहन ऋच्छ तनया करधारी ।
रमाकुल मंडित राजनंदिनीरत राजनंदिनी हितकारी ॥ ४२
ललित ललितालस रूपमंजरी मद लवंग नैन बिलासी ।
लाल अधर धर लाल बिलोचन लोचनलाल प्रकाशी ॥ ४३
लीला कर लकुटी लंबोदर मोहन लुक लुकी ललित बिहारी ।
लंकापुरि चालक लछमण अग्रज लछमीपति लोक सुधारी ॥४४
लोक अलोक लोक गति दायक लोचन लोक प्रकाशी ।
लुब्ध लोलुप लोक चिंतामणि लवण असुर शिरनाशी ॥४५
सर्व सर्वेश्वर सेवक वत्सल सर्वानि सकल विधाता ।
सत्य सनातन सत सत दायक सतगति सतगण त्राता ॥४६
सत सुखदायक शोक कुलनाशक सुंदर सौरभ धाम ।
सोम वंशधर सूर्य्यकुलदीपक सोक हरन सुख नाम ॥४७
सुखमय सुशील सुबल सखा बल सरजुतीर निवासी ।
सून सीतापति शक्र भय नाशन वधूगण हृदय विलासी ॥४८
शेस साकभुक सौभगदायक सरस सरसी-तीर वासी ।
सुंदर श्रीतन सुशीतल लोचन सुजन सुख रस रासी ॥४९
सफरी लोचनी पर शचीपति मान हर सती पति शंकर मोदी ।
शुक मुख आसव सौरीकुल मंडन शांत शांत हृदि शोधि ॥ ५०
श्रीधर श्रीपति श्रीदामासख शीतल मुख श्री श्री निवासा ।
शीतल शंखधर शंखचूडमर्दन शंखासुर असुर विनाशा ॥५१
सुंदर सोभन सुभग विलोचन शुकल वरण शुभकामी ।
सत शरण महीधर धरण प्रभु वृंदावन अवगामी ॥ ५२
षड़ ऋतु मादक षड़मुख मोहन षडभुज षडरस भोगी ।
पुन्य स्मरण नमनीय पदांबुज स्वामि स्वामिनी रसजोगी ॥ ५३

हलधर हासधर हेमांगिनी वल्लभ हरिण नयनी हृदि हार ।
हंस हरि हरित हंस ध्वज मोहन हरमन मादक सार ॥ ५४
ज्ञान गम्यपद ज्ञान रस भास्कर ज्ञानी ज्ञान रसवासी ।
ज्ञान अगम्य सुख अज्ञानीगण बिषमुख ज्ञानमय रसरासी ॥ ५५
इति वत ग्रथित नाम रतनाकर रसमय रासविलासी ।
रस रसना करि पीवत निरवधि नामी नव नवद्वीप वासी ॥५६
कटु मुख रसपूट देही दीन हीनजन हर हृदयक वाधा ।
हृदयक दाह दाहत निति निति तब पद विहीन श्रीराधा ॥ ५७
कुत्सित जनम तन मन वाणीगण पावनु भारत मांहि ।
कपट कोठरी अहंमम कोटि पै मम मन भटकत ताहिं ॥ ५८
छोर कलिकाल निरिखि चित चंचल मोहन मोहिनी श्यामा ।
नाम चम्पू तृण हृदिदशनांकृत फुत्कृत कृष्ण कवि नामा ॥५६

॥ इति नामरत्नावलिः ॥

अतिशय घोर कलिकाल तरन कूं जौ चाहौ हौ उपायो ।
सार सारतम गौरनाम रस चम्पु चित लगाय कें गायो ॥ १

॥ इति श्री गौरनाम रस चम्पू षष्ठ दशांक संपूर्ण ॥१६व

❋ सुभमस्तु । श्रीरस्तु । ❋

श्री वृंदावनमध्ये श्री जमुनातटे
कार्तिक सुदि पूर्णमासी शनिश्चरवासरे संवत् १७४२

श्री राधाकृष्णाभ्यां नमः ।
श्रीकृष्णचैतन्यचन्द्राय नमः ॥

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानांजनशलाकया ।
चक्षुरुन्मिलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥
श्री गणाधिपतये नमः, राम, राम, राम

श्रीलघु गोपाल चम्पू भाषा

श्री जुत कृष्ण कृष्ण चैतन्य । सहित सनातन रूप सुधन्य ॥
श्री गोपाल भट्ट रघुनाथ । वृज प्रिय पद रज धर निज माथ ॥१
श्री जुत जीव गुसाईं ध्याऊ । नित वंदन करि कृपा मनाऊ ॥
रची जु प्रभु मनसिंछा चार । करुसु तासु भाषा सुखसार ॥२
वृद्ध जीव कोऊ वृन्दावन के । कहत परम सिंछा निज मनकै ॥
होत दसा दसहीं तुहुँ मूढ । पीय यह सरस सुधा रस गूढ ॥३
आपही वृन्दावन में हिं जांनि । प्रभु की रुचि सेवा मन ठानि ॥
गहौ अभिलाषत दृढ निज भावहु । सतत सुमति संपत हित ध्यावहु ॥४
सुन मन राग मारग पथिकन हित । जू भावना रैन दिन मे त्रित ॥
श्री व्रजराज कुंवर लीला अव । इह क्रम कहत सहित हित सूंसभ ॥५
विद्या कीरत कुल आचार । वित विख्यात लोक व्यवहार ॥
केवल कृष्ण चरित जो होई । ध्यावत हिये विवेका सोई ॥६
श्री गोकुल द्युति अति ही सुहाई । सत चित आनन्द मय सुभदाई ॥
ताकी गोपर लह सत उतंग । राजत चित्र विचित्र सुरंग ॥७
ताहा कुछ निस रह बाजे वाजह । दुंदभ, आदि मधुर सुख साजह ॥
राम कृष्ण ही के गुण गावह । तिन के हिय कछु अवर न, आवह ॥८
सुनि अति हित जुज व्रजजन जागे । श्रीवल कृष्ण जुगल रस पागे ॥
हर हर करत दरस के हेत । जैसे जल सूं सुगंध सुमेत ॥९
लौकिक विध ही प्रेम वस डोलत । राम कृष्ण हित रस पगे वोलत ॥
तोय सज दीप द्युति ही दधि आन । मथै गाय गुण युग रस साण ॥१०
प्रेम विवस जिव तितही सुहाई । कछु छवि कहुँ की कही न जाई ॥
सिंघ द्वार पर भवन विशाल । तहां चढ़ि वंदि सूत रसाल ॥११
विरदावली सुछंद पवित्र । वहु विध वर्नत युगल चरित्र ।
मोहन मंदिर वाहर द्वार । गुनन की सुता वहु सुख सार ॥१२

राधा कृष्ण ही के गुन गावह। सरस प्रीत रस रीत वढावह।
सुक सारी युग सुजस सुनावह। होड़ा होड़ी रस उपजावह॥
वेनी आदि धुनि सहित युगाय। समही सभी लडावह आय॥
दंपति जगे जान रुचि पाय। इक तन मन पगे एक ही भाय॥१४
रजनी अंत श्री राधा कृष्ण। उठे हैं कैसे हू अति ही सतृष्ण।
सुन परिजन वेनावर वानी। सेजहु ते तज नीद रवानी॥१५
मर गजे वसन पलटत रस भीने। राजत अंसन पर भुज दीने।
सिथिल अंग चित्रत अरसाथत। अटपटे भूषण मृदु मुसिकात॥१६
तव दोऊ निज परिजन संग। आये स्नान भवन भर रंग।
दोऊ दिखि दर्पन निज निज शोभा। सुरत चिन्ह चित्रत अति ओभा॥१७
मंद हंसत प्रगटत रसकंदा। दंपत पावत परम आनंदा।
परजन देखि मनहि मन ध्यावहु। अनूपम छवि निध पार न पावहु॥१८
मन ही नवीन दिव्य घन दामन। मूर्त्त चित्र किधो दिन जामन।
मर्कत हेम तमाल लता है। सहरिपीय राधा वनिता है॥१९
सखी परिहास सहित श्री राधा। ध्याव पहल गुनन अगाधा।
स्वर्ण पीठ सो कोमल वास। तापर बैठे सहित हुलास॥२०
कर पद धोव कमल मुख सोहै। ध्याव प्रात ही सखी मन मो है।
न्हाय सुरभि जल सूं सुख साजै। पहर नील पट प्रिय रुचि राजै॥२१
वेनी वनी सीस मन लाला। अलक तिलक सज नैंन विशाला।
स्रवनन कुंडल नासा मोती। कंवु कंठ मन जग मग जोती॥२२
कर ह वलै कंकन झंकार। भूषन विध विराजत हार।
जपै सु युगल वर्न मन भूप। वर पतिव्रता परम अनूप॥२३
सुसर सास हरि चरणामृत लै। सास दरस वल अलि आवत है।
आय सास के पग परसे जव। विविध लजावह श्री जसुमत तव॥१४
चिर अभिलाषत सुतवधु पाय। नित नव नव हित वरन न जाय॥
राधा पुन रोहिणी जू कै पाय पर। मुख शशी किरण सरस शोभा भर॥

देखन हारन मोद वढ़ावे । निज रुच पाक भवन कू आवै ॥
होत विवश्र जहां रसोई । परसत पूर्ण अमी सो होई ॥२६
मन मंदिर तव वैठ विराजह । पीआवन चाहन सखि साजैह ।
जवहि झरोषन प्रीतम नयन । मिले है सो छवि तव कहत वने न ॥२७
व्रज हित तृस्न सुकृष्णहि ध्याऊं । प्रार्तहि परमानंद सुनाऊ ॥
स्नान सदन सहचर भृत आवहि । सलिल सुगन्ध सौंज सव ल्यावहि ॥
कर पद धोई सुमुख सुख वरखहि । तव हरि खरिक आइ निज हरषहि॥
दुहि दुहाईं सुरभिनु सुख दीनो । जल सुगंध सौं मंजनु कीनौं ॥२६
युगल वसन उपवीतहि धारत । प्रिय रुचि केसर तिलक सुधारत ॥
करि अंचवन संध्या सुभताई । कुल वयस्य विधि वंद जु आही ॥३०
मुरली कर संग सखी सुहाये । मात के पद वंदन कौं आए ।
देख मात्र मात्र पद प्रनमत । भूमिलग्न ह्वै ज्यौ विधि वरणत ॥३१
देखि जननि अति आतुर आई । स्वछ वछ नव हित ज्यौं गाई ॥
लिये उठाइ सुत सहित प्रमोद । करैं निछावरि वहुत विनोद ॥
हरि पुनि रोहिणी जू के पद परसत । यथा उचित सव कौ सुख वरणत॥
दाउहि मिलि वैठत गिरधारी । जननी जू के आज्ञाकारी ॥३३
देखि हर्षि शशिमुख दर्पण मह । छाया दान देत दुज सुत कंह ॥
कुल दुज गुरु सुत आज्ञा करही । सुरभी अलंकृत दै परही ॥३४
विप्र वधुनि औ मान्यगणनि है । दान वसन सन्मान वहुत कै ॥
वलित वृंद निज पूरणमासिहि । करि प्रणामसवविधि सुख रासिहि ॥
दियो गो ग्रास मात तव दीनैं । षटरस भोजन रुचि सौं कीने ॥
अंचै वैठि आसन लै पान । जननी आज्ञा करि सु प्रमान ॥३६
इत उत चहत मिलैं चख प्यारी । हरि लहै प्राण पुंजी तव न्यारी ॥
तव दोउ सुतनि सिंगारहि माता । पुनि प्रिय सहचर संग वल भ्राता ॥
पिता सभा में जहां विराजत । देवहु दान पुत्र हित साजत ॥
आइ नंदजू के पद वंदहि । वैठत सवही दै सुख कंदहि ॥३८

देखि मुदित सब ब्रजजन एसें । तृषित चकोर चंद रुचि जैसे ॥
केवल कृष्ण चित नित रहैं । । अनुसंधान न अरु कछु लहैं ॥३९
प्रकटहि हरि यस विविध गुण गन । परम प्रेमधि सवै मगन मन ॥
वैठि झरोखनि श्री ब्रजरानी । सुन सुत कथा लसैं रससानी ।।४०
सासु निदेस वैठि तंह राधा । सुनि गुण प्रिय दिखि लहै सुखसाधा ॥.
हित निधि ब्रजहि नियामक प्रेम । प्रकटत हरि हरिजन हित नेम ॥४१
हरि पुनि पितु आज्ञा लै भावहि । सखन संग गोचारण आवहि ॥
वन खग मृग जे हरि संग आये । पुर निकटहि रहि हरि लावलाये ॥४२
अव दिखि हरिहि परम सुख पावहि । पुलक प्रेम पगि संग सिधावहि ॥
जंह के स्थावर हरि रस पागे । जंगम संग रंग अनुरागे ॥४३
तंह ब्रजजन को कहै रीति । भाव सहित तिनके अति प्रीति ॥
शृंग वेणु वीणादि जु सोहन । खग मृग धुनि सुनि सु मनमोहन ॥४४
करत अनुकरण सहचर संग । संगम समय रचत वहु रंग ।
पुनि मध्याह्न सुछाक वहुत विधि । ल्यावै धाइ वनाइ सुरसनिधि ॥
जेवंत हसत सखन संग सोई । सो सुख कैसेहु वरणि न होइ ।
कह्यो सखनि तुम ब्रज सन्मुखही । सुरभिनु करहु तिनके सुख सुखही ॥
कृष्ण केलि वृन्दावन आई । प्यारी पथ चितवत चित चाई ।
श्री रोहिणी जसुमति सुविचारी । पेखि पहिल तैं प्रेम चिन्हारी ॥४७
इन्है न वनें विरह लव लेस । इहि मिस दियो राधिकहि निदेस ॥
तव अपराह्न सु राधा आवहि । प्रिय सखी संग छाक वहु ल्यावहि ॥४८
करि परिहास मिले पिय प्यारी । सो सुख लहै सखी सुखकारी ॥
विविध वस्तु श्री वृन्दा ल्यावहि । दै दंपतिहि मोद उपजावहि ।।४९
भोजन करि हरि प्यारी संग । करि विश्राम लहै रस रंग ।
नित नई प्रीत रीत रस सानी । वरणति सो सारिका सुवानी ॥५०
दोऊ परस्पर मिलित मुदित यौं । तन सु प्राण प्रिय पाय सखी ज्यौं ।
सुनि सुनि रीझी रीझि सुख पाई । आजत भलें भीजि भरि पाई ॥५१

उठि श्री राधारमण विराजहि । सखी समय सेवत सुख साजहि ॥
कबहुँ सिंगार परस्पर सोहैं । ललिता विशाखादि जु मन मोहैं ॥५२
विविध सु फूलनि रजना साजहि । तवहि वैठि दंपति अति राजहि ॥
सदा सुखद श्री गोपीनाथ । अति शोभित श्री राधा साथ ॥५३
छवि गुण सीव लसैं श्री राधा । मूरति पिय हित चित सुख साधा ॥
जुवा आदि खेलन वहु खेलि । दंपति रहे सरस रस झेलि ॥५४
तव श्री राधा गृह आइ सुवेसहि । सासुहि मिलि पिय आवनि देखहि
श्री गोविंद वजावत वेणु । सांझ सखन संग ल्यावत धेनु ॥ ५५
सुनि व्रजजन सब आगे आवहि । सवही हरि आनंद वढ़ावहि ॥
माता करहि सुवारहि आरति । सुत पर प्रेम सहित वहु वारति ॥
हौहि प्रेम वस तव सवही विधि । सजहि सहाउ रोहिणी हित निधी ॥
अंचल सौ मुख पौंछि यशोदा । सुतनि लड़ावहि सहित प्रमोदा ॥५७
तव जिवाइ शीतल रस भोग । सजहि समय जस सुख संयोग ॥
सुखद गाइ दुहि पुनि मन मोहन । कर पद धोइ लसत सुठि सोहन ॥
रजनी मुख अति सुख छवि छाई । प्रमुदित पिता संग तव आई ॥
व्यारू करत मधुर रस तेई । जे अति हित सों जननी देई ॥५८
अंचै पान लै पिता सभा मंह । सुनत सुतजु जन्मादि कथा कंह ।
जिहि विधि कीनो कंस विनास । दंत वक्र वधि पुनि व्रजवास ॥६०
सव के सव विधि दुख करि नास । पूरि मनोरथ करत विलास ॥
ते चरित्र रचि रुचिर अपार । गावत नचत लहैं सुख सार ॥६१
चित्र विचित्र कोऊ दरसावहि । पढ़इ छंद मन वांछित पावहि ।
हरि पुनि प्रिया सभा में आवहि । वैठि प्रिया मिलि मोद वढ़ावहि ॥
सुता वहू गुणिजन के जेती । दंपति के गुण गावहि तेती ।
पूर्व्वराग ते विविध प्रकार । युगल चरित निज रहस अपार ॥६३
हिलनि मिलनि नित नवल विलास । सुनि तन्मय ह्वै लहै हुलास ॥
हरि सन्मानहि सवहि सौं प्रीति । लौकिक और अलौकिक रीति ॥६४

नित कौतुक करि भोग विलास । निसि विलसत सुख सहित हुलास ॥
कबहु सुरभि संग सखन पठाई । प्यारी संग विहरत वन आई ॥६५
गिरिवन यमुना केलि वृन्दावन । रचत रास रस सरसजी सचि मन ॥
प्रेम चाह सौं प्रीतम प्यारी । हौंहि पिया पिय प्रेम विहारी ॥६६
पुनि प्रिय प्रिया प्रिया प्रिय ध्यावहि । तिनके चरित कहत क्यौं आवहि॥
मोहन मंदिर सेज सुहाई । सजहि फूल दल सखी सुखदाई ॥६७
सुखद परस्पर श्यामा श्याम । पैढै तन मन इक हित धाम ॥
दोऊ ललित सुलोचन कोरनि । चाहै चित चोरनि रुचिर उरनि॥६८
गौरी स्याम लसैं रस भीनें । श्याम गौर पट पहिरै झीने ।
इक इक करह उसीसे सोहैं । पुलक प्रेम पगि सखी मन मोहै ॥६९
श्री राधा कृष्ण सतृष्ण प्रेम रस । विलसत गुण धिनि ध्याऊ रसवस ॥
आवैं सेइ युगल रुचि जानि । दंपति सखी एक मन मानी ॥७०
निरखि झरोखनिं दंपति केलि । परम प्रमोद प्रेम पगी मेलो ।
दंपति उर में बेलि सुप्रीति । पालत माली प्रेम सुरीती ॥७१
पलु है चितवनि रस सरसाई । वाढति प्रणय मानकर पाई ॥
चाह पत्र पल्लव सु मिलाप । मधुरितु मारुत मधुरालप ॥७२
छिननि मिलनि लहहनि सुहाई । प्रति पल नव ललित सुखदाई ॥
लपटी तरुवर दृढ विश्वास । सुरभ कुसुम कल हास विलास ॥
सखी रुचि गुणि गुहि रच्यों हार हिय । श्री राधा दामोदर जसु जिय ।
श्री कृष्णदास सुललित गुण गावैं । सुनि मन शिक्षा सरस सुनावैं ॥
फिरि फिरि वरण मनहि समुझाई । उक्ति युक्ति रस भक्ति सुभाई ॥
सुनि भजि लहि सुप्रेम विश्वास । पावै नित वृंदावन वास ॥७५
मधि श्री लघु चंपू गोपाल । पूरण द्वादस वरणि रसाल ।
श्री राधा कृष्णहि जु लड़ावै । सुललित कृष्णदास गुन गावैं ॥७६
इति श्री लघुगोपालचंपूभाषा समाप्ता ॥ संवत् १७४७ वैसाख
वदी ५ लिखित भट्ट जगन्नाथ सुभ मस्तु ॥

ब्रजभाषा में प्रकाशित प्राचीन पुस्तकें—

१. गदाधरभट्टजी की वाणी (राधेश्याम गुप्ताजी से प्रकाशित)
२. सूरदासमदनमोहनजी की वाणी ,, ।।।)
३. माधुरीवाणी (माधुरीजी कृता) ।।=)
४. वल्लभरसिकजी की वाणी ।=)
५. गीतगोविन्दपद (श्रीरामरायजी कृत) ।)
६. गीतगोविन्द (रसजानिवैष्णवदासजी कृत) ।)
७. हरिलीला (ब्रह्मगोपालजी कृता) =)
८. श्री चैतन्यचरितामृत (श्रीसुबलश्यामजी कृत) ४॥)
९. वैष्णववन्दना (भक्तनामावली) (वृन्दावनदासजीकृता) =)
१०. विलापकुसुमाञ्जलि (वृन्दावनदासजी कृता) ।)
११. प्रेमभक्तिचन्द्रिका (वृन्दावनदासजी कृता) ।)
१२. प्रियादासजी की ग्रन्थावली ।=)
१३. गौराङ्गभूषणमञ्जावली (गौरगनदासजी कृता) ।)
१४. राधारमणरससागर (मनोहरजी कृता) ।)
१५. श्रीरामहरिग्रन्थावली (श्रीरामहरिजी कृता) ।–)
१६. भाषाभागवत (दशम, एकादश, द्वादश) (श्रीरसजानि-वैष्णवदासजी कृत) १)
१७. श्रीनरोत्तमठाकुरमहाशय की प्रार्थना ॥)
१८. संप्रदायबोधिनी (कविवरमनोहरजीकृता) =)
१९. ब्रजमण्डलदर्शन (परिक्रमा) १)
२०. भाषाभागवत (महात्म्य, प्रथम, द्वितीय स्कंध) ॥)
२१. कहानीरहसि तथा कुंवरिकेलि (श्रीललितसखीकृत) ।)
२२. ब्रह्मसंहितादिग्दर्शिनी टीका की भाषा (श्रीरामकृपाजी कृता) ।।=)
२३. किशोरीदासजी की वाणी ।।=)
२४. गौरनामरसचम्पू (कृष्णदासजी कृता) ।।=)

मुद्रक—रमनलाल बंसल, पुष्पराज प्रेस, मथुरा।